SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आँचल

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आँचल

(19वाँ अंक, जनवरी - जून 2023)

(कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका)

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री गुलजारी लाल
महानिदेशक

दिग्दर्शन

सुश्री अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

प्रबंध संपादक

श्री ज्योतिमय बाइलुंग
उप निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री पियूष रामटेके, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
सुश्री शिवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक

श्री जय राम सिंह, क. अनुवादक
सुश्री पूजा चौधरी, क. अनुवादक

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) - कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है । इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि कार्यालय उन विचारों से सहमत हो।

संरक्षक की कलम से

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है । कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों में हिंदी में लेखन के प्रति उत्साह बढ़ाने में इस पत्रिका की भूमिका सुखद अनुभूति देती है।

यह पत्रिका न सिर्फ रचनाधर्मिता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि उसमें निरंतर गुणात्मक सुधार के भी प्रयास कर रही है । पत्रिका में आम पाठकों की अभिरुचि के विषय जैसे पर्यटन, खानपान, सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ-साथ देश की मुख्यधारा में चल रहे विमर्शों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है ।

मैं संपादक-मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया है । मेरी कामना है कि यह पत्रिका इसी सहजता एवं सरलता से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाती रहे एवं निरंतर प्रगति करती रहे ।

गुलजारी लाल
महानिदेशक

दिग्दर्शन

इस कार्यालय की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का 19वाँ अंक पाठकों के बीच देखकर अच्छा लग रहा है । काम के भारी दवाब के बावजूद कार्यालय के कार्मिकों ने इस पत्रिका के लिए सामग्री लिखने में जो उत्साह दिखाया है, वह प्रशंसनीय है । भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों में लेखन एक आवश्यक तत्व है जिसको परिवर्धित करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में नवीन उत्साह का संचार करेगी । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई ।

अनिता सिंह
निदेशक (प्रतिवेदन)

संदेश

कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी में रचनात्मक अभिरुचि जगाने में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है । इसी कड़ी में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल सिद्ध हुई है ।

यह पत्रिका कार्मिकों को विभिन्न विषयों पर अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए एक सार्थक एवं सारस्वत मंच प्रदान करती है । मुझे आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ सिद्ध होगी ।

आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी भविष्य में भी इस पत्रिका को उत्कृष्ट और ज्ञानवर्द्धक बनाने के प्रति अपना उत्साह और सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे ।

ज्योतिमय बाइलुंग
उप निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

संरक्षक की कलम से		2	
दिग्दर्शन		3	
संदेश		4	
संपादकीय		6	
क्रम संख्या	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि		8
2	जो लौट के घर न आए		13
3	खिचड़ी की कहानी	श्री अमित कुमार सिन्हा	16
4	एक सामान्य दिन	श्री रॉबर्ट सिम्टे	17
5	अभी मैं हूँ	सुश्री मंजरी सारस्वत	18
6	जीवन - गाँव और शहर	श्री अभिनंदन अग्रवाल	19
7	कहाँ आ गया	श्री सुनील कुमार यादव	20
8	वाक़िफ़ नहीं कोई	श्री दीपेन्द्र कुमार 'राज'	21
9	थोड़ा ज़्यादा	सुश्री चैताली	22
10	चिट्ठियाँ	सुश्री रितू मोटवानी	23
11	अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष	श्रीमती नयना केळसकर	26
12	न्यायः देर या अँधेर	श्रीमती वीणा शिरशाट	30
13	शिक्षा का महत्व	सुश्री शिवानी	32
14	यह है मुंबई मेरी जान	श्री सुमेश जी. नायर	34
15	हास्यमेव जयते	श्री जय राम सिंह	37
16	धोबी का गधा	श्री प्रवीण नाफाड़े	41
17	आपके पत्रः आपकी प्रतिक्रियाएँ		44
18	चित्र बोलते हैं		49
19	नियुक्तियाँ/पदोन्नतियाँ/स्थानांतरण/सेवानिवृत्ति		56

हिंदी दिवस क्यों मनाएँ

जय राम सिंह
क. अनुवादक

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हमारे देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है । हिंदी दिवस हम सबों को राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी संवैधानिक और नैतिक जिम्मेवारियों की याद दिलाता है । इस दिन हम सभी हिंदी के प्रति स्वयं को निष्ठापूर्वक समर्पित करते हैं और अपने-आप को वचन देते हैं कि अपने जीवन में और विशेषकर अपने-अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिंदी में करेंगे।

बहुत-से लोग ऐसे भी हैं जो हिंदी दिवस की प्रासंगिकता पर ही प्रश्न-चिह्न लगाते हैं । उनका कहना है कि हमेशा कमज़ोर लोगों या कमज़ोर चीजों का दिवस मनाया जाता है ताकि उनका उत्थान हो सके । उनकी यह धारणा बिल्कुल ही ग़लत है । भारत उत्सवों का देश है । भारत जैसी विविधता किसी भी अन्य देश में नहीं पाई जाती । यहाँ सूचीबद्ध भाषाओं की ही संख्या 22 है । सभी बोलियों और उपभाषाओं को मिला दिया जाए तो यह 2000 से अधिक है । हर भाषा का अपना चरित्र होता है । प्रत्येक भाषा की मान्यताएँ अलग-अलग होती हैं । इतनी अधिक विविधतावाले देश में हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ कर सकने में समर्थ है । भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी की भूमिका विश्व-प्रसिद्ध है । हिंदी आज विश्व के कोने-कोने तक पहुँच चुकी है । ऐसी हिंदी को कमज़ोर कहना छोटी मानसिकता को दिखाता है ।

यदि कमज़ोरों का ही दिवस मनाया जाता है तो फिर हम स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विजयादशमी आदि त्योहार क्यों मनाते हैं । क्या भारत कमजोर देश है ? बिल्कुल नहीं । उत्सवधर्मिता तो हमारी संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण भाग है । हमारे देश में व्यक्तिगत समारोहों से अधिक महत्व सार्वजनिक समारोहों को दिया जाता है । यहाँ तक कि हमारे देश में तो व्यक्तिगत बर्थ-डे या एनिवर्सरी मनाने का भी चलन नहीं था । पश्चिमी देशों की देखादेखी अब हमारे देश में भी ऐसे दिन मनाए जाने लगे हैं । फिर भी, अभी भारत की संस्कृति का महत्व कम नहीं हुआ है, बल्कि बढ़ता ही जा रहा है । कोरोना-संक़ट में पूरी दुनिया ने अभिवादन करने के भारतीय तरीके को अपनाया । दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कहना कितना आह्लादक दृश्य उत्पन्न करता है । यह आनंद हाय, हेलो में कहाँ ?

भारत सरकार ने सरकारी स्तर पर हिंदी को कार्यालयीन भाषा बनाने के अनेक प्रयास किए हैं । हिंदी समेत भारत की सभी अधिसूचित भाषाओं में कंप्युटर पर काम करने के लिए यूनिकोड इस दिशा में संभवतः सबसे बड़ा कदम है । यूनिकोड के माध्यम से हिंदी की विश्व-व्यापी पहुँच हो गई है । इसके अलावा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर आधारित अनेक सॉफ्टवेयर आ रहे हैं जिनकी मदद से बोलकर अथवा स्कैन करके भी हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में टंकण किया जा सकता है । भारत सरकार ने एक और बड़ा कदम उठाते हुए स्मृति-आधारित अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 को सीधे ई-

ऑफिस से जोड़ दिया है । अब ई-ऑफिस में अनुवाद की ज़रूरत को पूर्ण करना अत्यधिक आसान हो गया है । अब सिर्फ हमें अपनी इच्छाशक्ति दिखानी है । हिंदी में काम करना सचमुच बहुत ही आसान और आनंददायक है ।

भारत सरकार पिछले तीन वर्षों से देश के विभिन्न नगरों में अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी दिवस और राजभाषा सम्मेलन आयोजित कर रही है । दो-दिवसीय इस कार्यक्रम में हिंदी की दशा और दिशा पर अनेक उपयोगी व्याख्यान होते हैं जिनका लाभ उठाया जा सकता है । इस वर्ष का कार्यक्रम महाराष्ट्र राज्य की सांस्कृतिक राजधानी कही जानेवाली नगरी पुणे में आयोजित हुआ जिसमें पूरे देश से राजभाषाकर्मियों ने बढ़-चढकर भाग लिया । हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि हमारी राजभाषा हिंदी बहुत जल्दी वह प्रतिष्ठा पा लेगी जिसकी वह पूर्ण हकदार है ।

अतः हिंदी दिवस हमारी कमज़ोरी का प्रतीक नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति का प्रतीक है । इसे हमें ज़रूर मनाना चाहिए और पूरे उत्साह से मनाना चाहिए ।

हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता ।

- महात्मा गाँधी

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी गृह पत्रिका "आँचल" का यह नियमित स्तम्भ है । इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे 'आज' को सुखमय बनाने के लिए अपने 'आज' की आहुति दे दी थी । इस स्तंभ में हम स्वतंत्रता के वैसे नायकों व नायिकाओं की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास करते हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती - संपादक)

अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी (1831-1858)

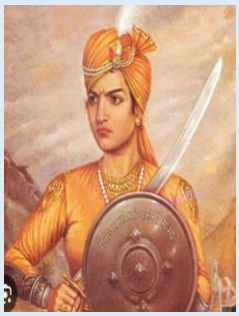

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी के 16 अगस्त जन्म जयंती पर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 की प्रेरणा स्रोत्र अमर शहीद वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी का जन्म 16 अगस्त 1831 को ग्राम मनकेड़ी जिला सिवनी मध्य प्रदेश में हुआ था। उक्त ग्राम वर्तमान में रानी अवंती बाई सागर सिंचाई परियोजना बरगी बांध नर्मदा नदी पर जबलपुर मध्य प्रदेश में बना है, डूब में आ गया है।

रानी अवंती बाई लोधी का जन्म मनकेडी के जमीदार राव जुझार सिंह लोधी के घर में हुआ था। अवंती बाई घुड़सवारी और तलवारबाजी में पारंगत थी उन्होंने तलवारबाजी घुड़सवारी अपने गांव मनकेड़ी में सीखी थी। उनका विवाह बाल्यावस्था में रामगढ़ के राजा श्री लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमाजीत सिंह के साथ हुआ था। वह धार्मिक प्रवृत्ति के थे ।

रानी अवंती बाई लोधी के 2 पुत्र आमन सिंह एवं शेर सिंह थे, रामगढ़ में राजा लक्ष्मण सिंह का शासन 1817 से 1851 तक रहा। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र विक्रमजीत ने राज पाट संभाल लिया परंतु वह वीतरागी प्रवृत्ति के थे। राजपाट रानी अवंती बाई लोधी ने संभाल लिया। रामगढ़ के राजा विक्रमाजीत सिंह को विक्षिप्त तथा आमन सिंह और पुत्र शेर सिंह नाबालिक मानकर अंग्रेजों ने 1853 मे हड़प नीति के तहत कोर्ट आफ वार्डस की कार्यवाई किया। परिणाम शेख मोहम्मद और मोहम्मद अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा जिससे रामगढ़ रियासत कोर्ट ऑफ वार्डस के कब्जे में चली गई अंग्रेजों की हड़प नीति का रानी अवंती बाई लोधी ने विरोध किया और कोर्ट की कार्यवाही का विरोध करते हुए अंग्रेजों से लोहा लेने का निर्णय लिया, इसी बीच राजा विक्रमादित्य की मृत्यु हो। नाबालिग बच्चों की सुरक्षा और रामगढ़ की बागडोर रानी अवंती बाई ने संभाल ली और रामगढ़ पर शासन करने लगी। 1857 ईसवी में सागर एवं नर्मदा क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध आग सुलग रही थी। अंग्रेजों के शासन के

खिलाफ स्थानीय राजा, महाराजाओं, जमीदार, दीवानों ने किसानों से अधिक कर लेने की नीति के कारण विरोध विद्रोही पनप रहा था। 'रानी अवंती बाई ने गोंड राजाओं के साथ मंडला के

उमराव सिंह, क्षेत्र के जमींदारों, मालगुजारो, के साथ एक बैठक आयोजित किया और सभी राजा महाराजाओं को जागीरदारों, जमीदारों को मालगुजार को एक संदेश भेजा।

पत्र में लिखा था "अंग्रेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियां पहन कर घर में बैठो, संदेश पत्र के लिफाफे में दो चूड़ियां भी भेजी गई थी उस वितरण प्रसाद की पुड़िया के रूप में किया गया था। पत्र सौहार्द और एकता का प्रतीक था चूड़ियां पुरुषार्थ जागृति करने का सशक्त माध्यम बना स्वीकार करने का अर्थ था अंग्रेजो के खिलाफ क्रांति में अपना समर्थन देना प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति का आगाज पूरे देश में हो गया था। क 1857 में मंडला क्षेत्र में क्रांति प्रारंभ हो गई थी, राजा शंकर शाह, राजा उमराव सिंह, रानी अवंती बाई लोधी ने अंग्रेजो के खिलाफ खुलकर विद्रोह। कर दिया था। मंडला के डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन ने जबलपुर से सेना बुलाई और युद्ध प्रारंभ हो गया, उसकी सेना को रानी अवंती बाई की सेना में पराजित कर दिया। परंतु वाडिंग्टन ने नागपुर और जबलपुर से फिर सेना बुलाई और जमकर ग्राम खैरी, भुआ बिछिया, देवहारगढ, रामष्ट्र नारायणगंज, घुगरी की पहाड़ियों में युद्ध छिड़ गया। रानी की सेना भारी पड़ी और वडिंगटन भयभीत हो गया। नागपुर की सेना और जबलपुर से सेन बुलाई, रीवा नरेश की सेनाएं आ गई और रामगढ़ के जंगलों में भारी युद्ध हुआ। रानी अवंतीबाई लोधी चारों तरफ से अंग्रेजों की सेना से घिर चुकी है और अपने सिपाहियों की मौत होते जा रही थी ।

रानी अवंती बाई लोधी घोड़े पर सवार थी और अंग्रेजों से लोहा ले रही थी, जब अपने को पूरी तरह से घिरा जानकर मौत सुनिश्चित है, तो ने आवाज देते हुए कहा मैं अंग्रेजो के हाथों से मरना नहीं चाहती। देश की रक्षा, राज्य की रक्षा की खातिर तलवार को अपने पेट में रानी अवंती बाई लोधी ने भौक ली और वीरगति को प्राप्त हो गई। परंतु अपने शरीर को अंग्रेजों को हाथ नहीं लगाने दी। ऐसी थी हमारी प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर शहीद वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी जो शहीद होकर भी अमर हो गई। देश की स्वतंत्रता की खातिर देश की महिलाओं के साहस की प्रतीक है रानी अवंती बाई।

नारी शक्ति का प्रतीक है वीरांगना रानी अवंती बाई जो निडर थी, साहसी थी और अपने राज और अपने सम्मान की रक्षा हेतु प्राणो की बलिवेद पर चढ़ गई और मरकर भी अमर हो। 20 मार्च 1858 को रानी अवंती बाई शहीद हो गई।

ऐसी अमर शहीद वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी का 16 अगस्त को जन्मदिन पर पूरे देश में जयंती मनाई जाती है। भारत सरकार ने उनक सम्मान में 20 मार्च 1988 को 60 पैसे और 19 सितंबर 2001 को 4 क्रेन डाक टिकट जारी किया। भारत शासन, मध्य प्रदेश शासन ने नर्मदा नदी पर एक बहुत बड़ा बांध है जिसका नामकरण भारत सरकार राज्य सरकार ने "रानी अवंती बाई लोधी सागर सिंचाई परियोजना किया है। अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी के नाम किया है। इसमें बिजली

का उत्पादन होता है। जबलपुर जिले के विकासखंड बरगी पर बांध 1975 से बनन शुरू हुआ और 1988 अर्थात 13 वर्षों में पूर्ण हुआ। जबलपुर, नरसिंहपुर, मंडला, सिवनी जिले के 4370 वर्ग किलोमीटर में रानी अवंती बाई सागर परियोजना से सिंचाई होती है और 100 मेगा वाट का विद्युत उत्पादन केंद्र भी बना हुआ है। इस बांध की लंबाई 75 किलोमीटर और अधिकतम चौड़ाई 4.5 किलोमीटर है, यह 267 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। लाखों किसानों के खेतों में रानी अवंती बाई लोधी सिंचाई परियोजना का पानी पहुंच है, किसानों के खेत हरे भरे हों रहे हैं। भारत देश में अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी की हजारों प्रतिमा स्थापित है, पाठ-पुस्तकों में जीवन पढ़ाई जा रही है, हजारों संस्थाएं, सैकड़ों स्कूल वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी के नाम संचालित है, भवनों के नामकरण है।

अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी अमर रहे, अमर रहे।

(आँचल परिवार त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

प्रफुल्ल चाकी (10 दिसम्बर 1888 - 1 मई 1908)

अमर शहीद प्रफुल्ल चाकी भारत के स्वतन्त्रता सेनानी एवं महान क्रान्तिकारी थे। प्रफुल्ल का जन्म उत्तरी बंगाल के बोगरा जिला अब) बांग्लादेश में स्थित बिहार गाँव में एक बहुत ही खुशहाल जोतेदार परिवार में हुआ था । इनका उपनाम बसु या बोस था लेकिन चूँकि इनके पूर्वज चनचकिया नामक स्थान से आए थे, अतः इनका उपनाम चाकी हो गया ।

जब प्रफुल्ल दो वर्ष के थे तभी उनके पिता जी का निधन हो गया। उनकी माता ने अत्यन्त कठिनाई से प्रफुल्ल का पालनपोषण किया। विद्यार्थी जीवन में ही प्रफुल्ल का परिचय- स्वामी महेश्वरानन्द द्वारा स्थापित गुप्त क्रांतिकारी संगठन से हुआ। प्रफुल्ल ने स्वामी विवेकानंद के साहित्य का अध्ययन किया और वे उससे बहुत प्रभावित हुए। अनेक क्रांतिकारियों के विचारों का भी प्रफुल्ल ने अध्ययन किया इससे उनके अन्दर देश को स्वतंत्र कराने की भावना बलवती हो गई।

बंगाल विभाजन के समय अनेक लोग इसके विरोध में उठ खड़े हुए। अनेक विद्यार्थियों ने भी इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रफुल्ल ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया। वे उस समय रंगपुर जिला स्कूल में कक्षा ९ के छात्र थे। प्रफुल्ल को आन्दोलन में भाग लेने के कारण जिला स्कूल से निकाल दिया गया। इसके बाद प्रफुल्ल का सम्पर्क क्रांतिकारियों की युगान्तर पार्टी से हुआ।

प्रफुल्ल चाकी को दिया गया पहला काम था विभाजन के पश्चात पूर्वी बंगाल और असम के नव नियुक्त लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जोसेफ बैम्फील्ड फुलर की हत्या, पर योजना असफल हो गई । इसके बाद प्रफुल्ल को खुदीराम बोस के साथ किंग्सफोर्ड को मारने का जिम्मा सौंपा गया ।

खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी का मुज़फ्फरपुर मिशन

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल के विभाजन का पुरजोर विरोध हुआ । लाखों की संख्या में लोग सड़कों पर उतर गए । इनमें से अनेक प्रदर्शनकारियों को उस समय के कलकत्ता के मैजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड ने क्रूर दण्ड दिया। अन्य मामलों में भी उसने क्रान्तिकारियों को बहुत कष्ट दिया था। किंग्सफोर्ड की न्यायिक क्रूरता क्रांतिकारियों की आँखों में खटकने लगी थी । किंग्सफोर्ड के जीवन पर आसन्न खतरे के बारे में गुप्तचर सूत्रों की चेतावनी भी अँग्रेजों को लगातार मिलने लगी । उसे पदोन्नति देकर मुजफ्फरपुर भेज दिया गया । 'युगान्तर' समिति की एक गुप्त बैठक में किंग्सफोर्ड को मारने का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु खुदीराम बोस तथा प्रफुल्लकुमार चाकी का चयन किया गया। खुदीराम को एक बम और पिस्तौल दी गयी। प्रफुल्लकुमार को भी एक पिस्तौल दी गयी। मुजफ्फरपुर में आने पर इन दोनों ने सबसे पहले किंग्सफोर्ड के बँगले की निगरानी की। उन्होंने उसकी बग्घी तथा उसके घोडे का रंग देख लिया। खुदीराम तो किंग्सफोर्ड को उसके कार्यालय में जाकर ठीक से देख भी आए।

30 अप्रैल 1908 को ये दोनों निर्धारित काम के लिये बाहर निकले और किंग्सफोर्ड के बँगले के बाहर घोड़ागाड़ी से उसके आने की राह देखने लगे। बँगले की निगरानी हेतु वहाँ मौजूद पुलिस के गुप्तचरों ने उन्हें हटाना भी चाहा, परन्तु वे दोनों उन्हें योग्य उत्तर देकर वहीं रुके रहे। रात में साढ़े आठ बजे के आसपास क्लब से किंग्सफोर्ड की बग्घी के समान दिखने वाली गाड़ी आते हुए देखकर खुदीराम गाड़ी के पीछे भागने लगे। रास्ते में बहुत ही अँधेरा था। गाड़ी किंग्सफोर्ड के बँगले के सामने आते ही खुदीराम ने अँधेरे में ही आनेवाली बग्घी पर निशाना लगाकर जोर से बम फेंका। हिन्दुस्तान के स्वाधीनता संग्राम में यह पहला बम-विस्फोट था । इस विस्फोट की आवाज उस रात तीन मील तक सुनाई दी । इस घटना ने तहलका मचा दिया जिसकी गूँज इंग्लैंड तथा यूरोप तक जा पहुँची । यों तो खुदीराम ने किंग्सफोर्ड की गाड़ी समझकर बम फेंका था परन्तु उस दिन किंग्सफोर्ड के थोड़ी देर से क्लब से बाहर आने के कारण वह बच गया। दैवयोग से गाडियाँ एक जैसी होने के कारण दो यूरोपीय स्त्रियों को अपने प्राण गँवाने पड़े। अँधेरे का फायदा उठाकर खुदीराम तथा प्रफुल्लकुमार दोनों विपरीत दिशा में भाग गए ।

दोनों क्रांतिकारियों ने समझ लिया कि वे किंग्सफोर्ड को मारने में सफल हो गए हैं। वे दोनों घटनास्थल से भाग निकले। पूरी रात लगभग 25 मील पैदल चलकर खुदीराम वैनी गाँव पहुँचे । वहाँ प्यास बुझाने के लिए एक चाय की दुकान पर गए । उसी चाय की दुकान पर पुलिस के दो सिपाही भी

चाय पी रहे थे । उन्हें खुदीराम पर शक हुआ । मैले कपड़े, भाषा और थकान के कारण उन्हें खुदीराम पर शक हुआ। उन्होंने खुदीराम से कुछ सवाल पूछे । जवाब ठीक से ना मिलने से दोनो का शक गहराता गया । उन्होंने उसको पकड़ लिया । खुदीराम ने उनसे छुड़ाने का काफी प्रयास किया लेकिन वो विफल रहे । उन पर मुकदमा चला जिसमें फाँसी की सज़ा सुनाई गई । सेशन कोर्ट के फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई । बंगाल के नामी-गिरामी वकीलों ने निःशुल्क खुदीराम की पैरवी की । पर, ब्रिटिश न्याय अपना मन बना चुका था । 11 अगस्त 1908 को उन्हें मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दी गयी। उस समय उनकी उम्र मात्र 18+ वर्ष थी।

प्रफुल्ल चाकी ने समस्तीपुर पहुँच कर कपड़े बदले और टिकिट खरीद कर रेलगाड़ी में बैठ गए। दुर्भाग्य से उसी में पुलिस का सब इंस्पेक्टर नंदलाल बनर्जी बैठा था। उसने प्रफुल्ल चाकी को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से अगली स्टेशन को सूचना दे दी। स्टेशन पर रेलगाड़ी के रुकते ही प्रफुल्ल को पुलिस ने पकड़ना चाहा लेकिन वे बचने के लिए भागे। परन्तु जब प्रफुल्ल ने देखा कि वे चारों ओर से घिर गए हैं तो उन्होंने अपनी रिवाल्वर को मुँह के अंदर रखकर ट्रिगर दबा दिया । यह घटना १ मई १९०८ की है। बिहार के मोकामा स्टेशन के पास प्रफुल्ल चाकी की मौत के बाद पुलिस उपनिरीक्षक एनएल बनर्जी ने चाकी का सिर काट कर कोलकाता भेजा गया ताकि वहाँ खुदीराम उसे पहचान सके । यह अंग्रेज शासन की जघन्यतम घटनाओं में शामिल है। दो युवा क्रांतिकारियों श्री शिरीष पाल और रेनेन गांगुली ने नंदलाल बनर्जी की हत्या कर उसके इस कुकृत्य का बदला लिया ।

(आँचल परिवार त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति श्री प्रफुल्ल चाकी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । हमारा देश एक ओर जहाँ चीन, पाकिस्तान, आतंकवाद जैसी बाहरी चुनौतियों से मुकाबला कर रहा है वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं से भी लोहा ले रहा है । इस स्तंभ में देश के ऐसे रण-बाँकुरों की रण-गाथाएँ सुनाने का प्रयास किया जाता है जिन्होंने देश के प्रति अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखा और ज़रूरत पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे । अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान की रक्षा में ऐसे समर्पित होकर घर से निकले कि कभी लौट नहीं पाए । आशा है कि आप सुधी पाठकों को हमारा यह विनम्र प्रयास अच्छा लगेगा - संपादक)

दिनांक 02 अप्रैल 21 को एसपी कार्यालय से प्राप्त एक विशेष इनपुट पर, डीवीसीएम मद्दन्ना और तांती कमलेश उर्फ गांधी के साथ सीपीआई (माओवादी) के 35-40 कैडरों के साथ थाना तर्रेम, बीजापुर, छत्तीसगढ़ के तहत गांव अलीगुडा और जोनागुडा के जंगल क्षेत्र में उपस्थिति के बारे में, डीआईजी ऑपरेशन बीजापुर और एसपी बीजापुर द्वारा एक संयुक्त विशेष अभियान की योजना बनाई गई थी। खुफिया इनपुट के बारे में विस्तृत जानकारी देने के बाद, संयुक्त टीमें 2 अप्रैल, 2021 को 23:30 बजे ऑपरेशन बेस तारेम से रवाना हुईं। छह स्ट्राइक टीमों में विभाजित, टीमें जोनागुडा गाँव के लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ीं।

स्ट्राइक टीमों का नेतृत्व विभिन्न कमांडरों ने किया) 1 स्ट्राइक :एसटीएफ+डीआरजी) के लिए सीसी वासुदेव, स्ट्राइक 2 (डीआरजी) के लिए एसआई धरम सिंह तुलावी, स्ट्राइक 3 के लिए श्री मनीष कुमार (210 कोबरा और राज्य पुलिस की 06 टीमों के साथ 241 सीआरपीएफ की एक टुकड़ी का प्लाटून नंबर 01), स्ट्राइक 3 के लिए श्री संदीप द्विवेदी (समग्र कमांडर), स्ट्राइक 4 (168 सीआरपीएफ के सैनिक) के लिए श्री शैलेंद्र कुमार ,स्ट्राइक 5 (153 और 168 सीआरपीएफ के सैनिक) के लिए श्री पंकज द्विवेदी और स्ट्राइक 6 (153 सीआरपीएफ के सैनिक) के लिए श्री इंद्रनील दत्ता।

सभी टीमें जोनागुडा गाँव में अपने निर्धारित स्थानों के लिए रवाना हुईं। लगभग 0915 बजे, सभी स्ट्राइक टीमें चोटी 221 पर पहुंच गईं। 0925 बजे, स्ट्राइक 3 को वास्तविक समय पर सूचना मिली कि 40-50 सशस्त्र माओवादी गांव तेकलगुरियम से चोटी 221 की ओर बढ़ रहे हैं। श्री मनीष कुमार, डीसी के नेतृत्व में स्ट्राइक 3 ने चोटी 221 से माओवादी आंदोलन की निगरानी की। सुबह साढ़े दस बजे अद्यतन खुफिया सूचना से पता चला कि पांडु मेट्टा में चोटी 317 की तलहटी में 50-60 सशस्त्र माओवादी मौजूद हैं।

जीआर एन (18-25-960 ई 81-01-941) की ओर बढ़ते समय, सैनिकों ने माओवादी गतिविधि देखी और स्ट्राइक कमांडर को सूचित किया। माओवादियों ने चोटी 221 के उत्तरी हिस्से से भारी गोलीबारी और विस्फोटक हमले किए। डीसी मनीष कुमार ने पांडु मेट्टा की ओर दो एचई बम दागे, जिससे कुछ माओवादी गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। श्री संदीप द्विवेदी, 2 आईसी, और अन्य कमांडो ने भी भाग रहे माओवादियों को उलझा कर रखा ।

सैनिकों ने रक्षात्मक रुख अपनाया और नुकसान के बावजूद माओवादियों की ओर से की जा रही भीषण गोलीबारी का मुकाबला किया। सशस्त्र माओवादियों की ओर से भारी गोलीबारी के बीच सीआरपीएफ के सीटी/जीडी समैया माडवी ने बहादुरी से घेराबंदी की ज़द में आए प्लाटून को सुरक्षित निकालने में मदद की, लेकिन माओवादियों की घातक गोली लगने से उनकी दुखद मौत हो गई। संदीप द्विवेदी, 2 आईसी, ने सीटी/जीडी समैया माडवी के शव को बरामद करने और 241 सीआरपीएफ के जवानों को निकालने का फैसला किया।

एचसी/जीडी राज कुमार यादव, सीटी/जीडी शंभू रॉय, सीटी/जीडी बबलू राभा और अन्य ने माओवादियों पर लगातार फायरिंग की, जिससे कई माओवादी हताहत हुए और सीटी/जीडी समैया माडवी का शव बरामद किया गया। तीनों ने शव को निकालने और सभी फँसे हुए कर्मियों को सफलतापूर्वक निकालने में उल्लेखनीय बहादुरी का प्रदर्शन किया।

स्थिति का आकलन करने के बाद, श्री संदीप द्विवेदी, 2 आईसी, ने सभी सैनिकों को टेकलगुरियम गांव की ओर बढ़ने का आदेश दिया। पूर्वी तरफ से आगे बढ़ने के दौरान टीम 1 और टीम 2 को माओवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी का सामना करना पड़ा। टीम ने इं 2स्पेक्टर/जीडी दिलीप कुमार दास, सीटी/जीडी शंभू रॉय और अन्य डीआरजी कमांडो के साथ उल्लेखनीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए 4 से 5 माओवादियों का सफाया किया और एक महिला माओवादी का मृत शरीर बरामद किया । साथ ही 1 इंसास राइफल, 26 इंसास लाइव राउंड और 3 मैगजीन भी बरामद कीं। टेकलगुरियम गाँव की घेराबंदी की गई, जिससे पूर्ण सामरिक वर्चस्व सुनिश्चित हुआ।

ऑपरेशन कमांडर ने डीआईजी (ऑपरेशन), सीआरपीएफ, बीजापुर और आईजीपी छत्तीसगढ़ सेक्टर को स्थिति के बारे में सूचित किया, मजबूत जवाबी कार्रवाई, घायल कर्मियों को निकालने और अतिरिक्त गोला-बारूद की आवश्यकता पर जोर दिया। माओवादियों की तीव्र गोलीबारी के कारण हेलीकॉप्टर उतर नहीं सका, इसलिए घायल कर्मियों को सुरक्षित क्षेत्र में ले जाया गया। स्ट्राइक टीमों ने खुद को एक बॉक्स फॉर्मेशन में व्यवस्थित किया, जिसमें टीम 1 और 2 आगे की ओर, टीम 3 और 6

पीछे और टीम 4 और 5 बीच में थीं जिस पर घायलों और मृतकों को निकालने की जिम्मेदारी थी । पूर्व और दक्षिण से लगातार माओवादी हमलों के बावजूद स्ट्राइक सैनिक बीजीएल/आरपीजी और स्वचालित हथियारों का इस्तेमाल करते हुए आगे बढ़े। माओवादियों ने सैनिकों की पिछली स्थिति को चुनौती देते हुए अपनी गोलीबारी तेज कर दी। निकासी रोक दी गई थी, और टीम कमांडरों ने कवर लेने और माओवादियों को उलझाकर रखने का फैसला किया।

सैनिकों ने असाधारण साहस और समन्वय का प्रदर्शन किया, 6 घंटे से अधिक समय तक भीषण मुठभेड़ में संलग्न रहे और माओवादियों को बड़ा नुकसान पहुंचाया । 210 कोबरा के आठ बहादुर कमांडो, जिनमें इंस्पेक्टर/जीडी दिलीप कुमार दास, एचसी/जीडी राज कुमार यादव, सीटी/जीडी बबलू राभा और सीटी/जीडी शंभू रॉय शामिल हैं, ने माओवादियों को बेअसर करने, जीवन की रक्षा करने और सरकारी संपत्ति की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया ।

इंस्पेक्टरजीडी/ दिलीप कुमार दास ने माओवादियों की गोलीबारी के बावजूद घायल कमांडो के आसपास सुरक्षा मजबूत कर असाधारण बहादुरी और नेतृत्व का परिचय दिया। बल की सर्वोच्च परंपराओं में उनकी सबसे असाधारण और विशिष्ट बहादुरी, असीम साहस, अदम्य इच्छाशक्ति और सर्वोच्च बलिदान के सम्मान में, इंस्पेक्टरजीडी/ दिलीप कुमार दास, एचसी / जीडी राज कुमार यादव, सीटी / जीडी बबलू राभा और सीटी / जीडी शंभू रॉय को कृतज्ञ देश ने शांतिकाल में देश के दूसरे सर्वोच्च वीरता पदक "**कीर्ति चक्र** (मरणोपरांत)" से सम्मानित किया है।

आँचल परिवार इंस्पेक्टरजीडी/ दिलीप कुमार दास, एचसी / जीडी राज कुमार यादव, सीटी / जीडी बबलू राभा और सीटी / जीडी शंभू रॉय की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है ।

जब अन्त समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं ।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़ुर्बानी ।

-कवि प्रदीप

खिचड़ी की कहानी
(कविता)

- अमित कुमार सिन्हा
स.ले.प.अ.

खिचड़ी रानी खिचड़ी रानी होती है यह बड़ी सयानी
सब लोगों के मन को खिचड़ी बहुत बहुत ही भाए
क्योंकि इसे पकाना आसाँ नहीं कोई परेशानी
कितनी सुन्दर कितनी आसाँ खिचड़ी की यह कहानी ।

और पचाने में इसको होती है बहुत आसानी
इसलिए इसको कहते हैं सब खानों की रानी
चाहे हो कोई बीमारी कहीं जाने की झटपट हो
कभी यदि हो व्यस्तता चाहे कोई खटपट हो
खाओ खिचड़ी पकाओ खिचड़ी नहीं कोई मनमानी
कितनी सुन्दर कितनी आसाँ खिचड़ी की यह कहानी ।

बूढ़े, बच्चे, बड़े या छोटे सभी पसंद करते हैं
हों विवाहित या अविवाहित निर्भर ही रहते हैं
खिचड़ी होती है औषधि और गुणों की खान
स्वाद सहित यह अमृत खिचड़ी होती है गुणवान
जितना चाहो खाओ इसको नहीं कोई नुकसान
इसको खाकर खुश होती है अम्मा दादी नानी
कितनी सुन्दर कितनी आसाँ खिचड़ी की यह कहानी ।

चार दोस्त खिचड़ी के होते संग कमाल करते हैं
दही, पापड़, घी, अँचार इसको लजीज करते हैं
क्या अमीर और क्या गरीब सबके पेट भरती है
अब तो पाँच सितारा होटल में खिचड़ी बिकती है
इसीलिए तो खिचड़ी होती सब खानों की रानी
कितनी सुन्दर कितनी आसाँ खिचड़ी की यह कहानी ।

"राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

Just A Regular Day

- Shri Robert Simte
Auditor

Woke up late, just like any other day
Put on my suit, ready to rush to office
As I sat on my bike, a hand tapped on my shoulder
Pleading for something, just to feed her hunger

Happy, I was to help, gave her few bucks
Late was I, so I broke the traffic signal
A siren sounded from behind, had to halt
Paid my fine, cause I couldn't afford to be late

Clear from clouds, the sky was blue
I smiled as I made it just in time
As I sat on my chair, to catch my breath
What a way to start your day, I exclaimed!

एक सामान्य दिन

- रॉबर्ट सिम्टे
लेखापरीक्षक

आज भी देर से ही हुआ मेरा जागरण
जगते ही याद आया ऑफिस के लिए गमनागमन
ज्यों ही चलने को हुआ, कंधे पर कोई हाथ आया
बाबूजी, कुछ दे दो, एक मद्धिम चेहरा गिड़गिड़ाया

खुश था कि मैंने कुछ मदद तो की
पर देर हो गई थी सिग्नल की परवाह न की
पीछे से सायरन बजा, मुझे रुकना पड़ा
जुर्माना चुकाया, देर से जाना अपराध है बड़ा

आसमान आज बिल्कुल साफ है
और मेरे पास मुस्कुराहटों का भाप है
कुर्सी पर बैठकर थोड़ा इत्मीनान हुआ
दिन शुरु भी हो गया, अब जाकर भान हुआ ।

(अनुवाद - श्री जय राम सिंह, क. अनुवादक)

"सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है।" - वाल्टर चेनिंग

अभी मैं हूँ

(कविता)

- सुश्री मंजरी सारस्वत, लेखापरीक्षक

अभी मैं हूँ / अभी मैं हूँ, हमेशा रहूँगी
शरीर खाक़ में मिल जाए या राख में मिल जाए
मेरी रूह कहीं न कहीं किसी जगह होगी
रूह को कोई नहीं मार सकता
न खाक़ में या राख में मिला सकता
क्योंकि वह जड़ नहीं, चेतन है
बस रूह ही है जो अमर है ।

मेरी रूह से कुछ विचार पनपे हैं / वे सारे विचार मेरे अपने हैं
मेरा शरीर रहे या न रहे / पर मेरे विचार रहेंगे
इधर नहीं तो उधर, कहीं न कहीं मौजूद रहेंगे
चाहे किताबों में, चाहे किसी के ख्वाबों में
यादों में या अनुवादों में / या किसी अन्य रूप में
वे जैसे थे वैसे ही रहेंगे ।

कोई तन को मार सकता है, मन को नहीं
कोई धन चुरा सकता है, मन को नहीं
मेरी आवाज़ मुझसे भी तेज चलती है
उसके चलने से दिशाएँ मचलती हैं
मेरी आवाज़ को दिशाओं से लगाव है
और शायद मनुष्य का यही सबसे बड़ा जुड़ाव है

मेरा शरीर मर सकता है, कोई मुझे मार सकता है
लेकिन आवाज़ नहीं / आवाज़ एक हवा है
हवाओं को कौन बाँध सकता है

मैं हूँ, मेरे विचार हैं, मेरी आवाज़ है
जीवन का यह सबसे सुन्दर साज है
अभी हूँ, हमेशा रहूँगी / अर्थी उठेगी, तब भी रहूँगी ।

"हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।" - विलियम केरी

जीवन - गाँव और शहर

(कविता)

- श्री अभिनन्दन अग्रवाल, स.ले.प.अ.

गाँव बेचकर शहर खरीदा कीमत बड़ी चुकाई है
जीवन के उल्लास हैं बेचे तब पाई तन्हाई है
जब बेचा ईमान- धरम तब शानो-शौकत आई है
मस्ती बेची प्यास खरीदी कैसी यह महँगाई है ?

बीघा बेचकर स्क्वायर फीट ये कैसी सौदाई है
संयुक्त परिवार से कटकर कितनी यह पीढ़ी मुरझाई है
रिश्तों में है भरी चालाकी बातों में चतुराई है
गुम हो गई मिठास कहीं, कड़वाहट भर आई है

टूटी अब रस्सी की खाटें मैट्रेस ने जगह बनाई है
आज अँचार-मुरब्बे-चटनी शो-केस में सजी दवाई है
बेची हैं माटी की महकें फ्रेशनर की खुशबू पाई है
चूल्हा-चौका बेच दिया और गैस पर रोटी पकाई है

बाल कट रहे सैलूनों में दिखता अब कहाँ नाई है
कहाँ दोपहर गप्प मारती अम्मा संग चाची-ताई है
मलाई-बर्फ के गोले बिक गए कोक की बोतल आई है
मिट्टी के कितने घड़े बिके तब फ्रिज में ठंढ़क आई है

गोबर से लिपे फर्श बिके तब टाईल्स में चमक आई है
देहरी से गोमाता बिक गई अब कुत्तों संग रात बिताई है
ब्लड-प्रेशर, शुगर ने हर घर अब ले ली अँगड़ाई है
खत्म कहानियाँ हुईं पुरानी वेब सीरीज ने जगह बनाई है

गाँव बेचकर शहर खरीदा कीमत बड़ी चुकाई है
जीवन के उल्लास बेचकर खरीदी हमने तन्हाई है
कीमत बड़ी चुकाई है! कीमत बड़ी चुकाई है !!

"हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है" - गिरिधर शर्मा

कहाँ आ गया

- श्री सुनील कुमार यादव, लेखापरीक्षक

कहाँ था मैं और कहाँ आ गया
गाँव की गलियों से दूर
छोटी-पगडंडियों से दूर
खेत-खलिहानों से दूर
दोस्तों की मस्तियों से दूर / बड़े-बुज़ुर्गों के किस्से-कहानियों से दूर
माँ के हाथ से मिलते निवालों से दूर / पिता की निःस्वार्थ सीखों से दूर
कहाँ था मैं कहाँ आ गया

यह शोर-शराबे से भरा शहर / और व्यस्तता की चादर ओढ़े जिन्दगी
अपनों से बेख़बर, ट्रेन के डिब्बे में धक्के खाता हुआ
वे पल बरबस याद आते हैं / जब हम अकारण कहीं भी जा सकते थे
गलियों-नुक्कड़ों में कुछ भी खा सकते थे / दोस्तों के साथ यों ही गप्पें लड़ाना
जाने-अनजाने ठहाकों की झड़ी लगाना / अब लगता है यह सब कहीं दूर मैं छोड़ आया
कुछ नए दोस्त बनाने में बहुतों को छोड़ आया
कहाँ था मैं कहाँ आ गया

बात सिर्फ इतनी नहीं कि कहाँ से कहाँ आ गया
बात यह भी है कि मैं क्या था और बन क्या गया
एक बात सुनी थी / कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है
लेकिन यह नहीं मालूम था / कि सब पाकर भी रोना पड़ता है
अब महसूसता हूँ / आम के बाग में करेला बो दिया
पीतल के चक्कर में हीरा खो दिया

वे बातें अब याद आती हैं / जिन्हें मैं कब का भूल गया
कहाँ था मैं कहाँ आ गया / न घर-बार है न परिवार है साथ
ये जो छोटे से सपने थे / वे इतनी बड़ी कीमत ले गए
न कोई पूछनेवाला है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ / न कोई पूछनेवाला कि मैं क्या कर रहा हूँ
अब बस एक सवाल सा है मन में / कि यह क्या, कब, कैसे और क्यों हो गया
सबकी नज़रों से दूर चला गया
कहाँ था मैं कहाँ आ गया

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है ।" - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

वाक़िफ़ नहीं कोई

(कविता)

- दीपेन्द्र कुमार 'राज',
लेखापरीक्षक

एक दिन तो खत्म होगा ही पेट्रोलियम
फिर लोग चाहेंगे प्रकृति में ऊर्जा सृजन
पेट की भूख रसोई की आग से बुझेगी
सैर सपाटे काफिलों की गाड़ियाँ रुकेंगी

पत्ते फिर बीनेंगे लकड़हारा शब्द होगा
लकड़ियाँ बमुश्किल मिलेंगी कोयला भी
पेड़ के पत्ते हार्बेरियम से निकलकर
बताएँगे अपने कुल परिवार का महत्व

पचास सालों के बाद भी तत्काल लगेंगे
टाइम मशीन से एक साल को एक दिन कर
लीथियम बैटरी की खुशी चंद दिन
धूप की बेसब्री तब भोर में जगाएंगे

आरओ मिनरल के आगे होंगे घड़े
धरती पर हर सभ्यता की अति हुई
गाँव बने कुँए सरोवर बाग हरे-भरे
अब ठंढ़ी साँसों का कारोबार बढ़ा

मगर एक बात तो सच है सच रहेगी
ऊर्जा रूपांतरण में क्षय का अटल नियम
अनंत ऊर्जा का स्रोत ढूँढ़ते तपस्वी भी
पीपल बरगद को छोड़ वातानुकूलन में

जिन्दगी जीने से अधिक की जद्दोजहद
नदी बहती नहीं रुकावटें तमाम उद्देश्य
हर काम की जल्दी उम्र भी जल्दी में
बस पहुँचना कहाँ? वाकिफ नहीं कोई

"प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।" - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

थोड़ा ज़्यादा

(कविता)

- सुश्री चैताली तुषार बने
(पुत्री – श्री तुषार शंकर बने, व.ले.प.)

रेस्तराँ और फूड डिलीवरी एप के ज़माने में
मैं खाना पकाना सीखना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
दुनिया में जहाँ हर तरफ फैशन का जलवा है
मैं प्रकृति की गोद में रहना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
ओला और ऊबर कैब के ज़माने में
मैं दूर, बहुत दूर तक जाना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
तब जबकि नए दोस्त बनाने का फैशन-सा है
मैं पुरानों के साथ समय बिताना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
आजकल जबकि साथ-निभाना, साथ रहना बेहद कठिन है
मैं सबके साथ ही रहना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
दुनिया में जहाँ दिन की शुरुआत सुबह से होती है
मैं रात रहते ही शुरुआत करना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
आजकल पार्टियों और क्लबों का चारों तरफ शोर है
मैं शांत, विश्रांत रातें चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
तब जबकि दुनिया में कैपेचिनो और मोचा छाए हैं
मैं चाय ही पीना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
दुनिया में जब दोस्त भी अजनबियों की तरह हो गए हैं
मैं उन्हें परिवार बनाना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
जबकि लोग रात-रात भर ऑनलाइन रह रहे हैं
मैं रात भर चाँद को निहारना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
आजकल का सम्प्रेषण शब्दों पर आधारित हो गया है
मैं अपने मौन से सब कुछ बताना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
जब अँधेरा होने पर मेरी छाय भी मेरा साथ छोड़ देती हो
मैं मज़बूती से खड़ी रहना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
चारों तरफ जब डिजिटल मेसेजिंग हो रही है
मैं काग़ज़ पर लिखना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
रीमेक अब प्रयोग नहीं, फैशन बन गया है
मैं मौलिकता में विश्वास करती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
संसार के सामने पूर्ण विराम सा दिखने लगा है
मैं थोड़ा और आगे बढ़ना चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...
संसार जब स्व-संदेहों से घिरता जा रहा है
मैं आत्म-विश्वास चाहती हूँ, थोड़ा ज़्यादा...

चिट्ठियाँ

- रितु मोटवानी
व.ले.प.अ.

चिट्ठियां लिखने का (और पढ़ने का भी) अपना ही मजा़ था । समय बीत जाने पर बीते हुए समय की याद बहुत आती हैं । उसी में से एक चिट्ठियाँ लिखने की यादें हैं । असल में हुआ यह कि एक दिन बैठे बैठे कुछ गाने याद आ गए, जैसे:

....खत लिख दे संवरिया के नाम बाबू, कोरे कागज पर लिख दे सलाम बाबू....
....ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर, तुम नाराज न होना....
....चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है....
....खत से जी भरता ही नहीं, नैन मिले तो चैन पड़े....
....चिठिया हो तो हर कोई बांचे, भाग्य न बांचे कोई....
....लिखे जो खत तुम्हें, वो तेरी याद में....
....फूल तुम्हें भेजा है खत में, फूल नहीं मेरा दिल है....
....प्रियतम अपने खत में लिखना, क्या यह तुम्हारे खातिर है....

ऐसे हजारों गाने हिन्दी व अन्य भाषाओं की फ़िल्मों के हैं जो कभी लोगों के दिमाग और होठों पर राज किया करते थे । हम जब हॉस्टल में रहते थे तो घर पर पत्र लिखते थे । हर पत्र की प्रारम्भिक पंक्तियाँ व अन्तिम पंक्तियाँ बिल्कुल एक ही तरह की होती थीं, जैसे --
परम पूजनीय बाबू जी एवं अम्मा जी,
चरण कमलों में सादर प्रणाम
मैं यहाँ पर ठीक हूँ और आशा करती हूँ कि ईश्वर की महती कृपा से आप सब लोग भी ठीक होगें ।

अन्तिम पंक्ति भी कुछ ऐसी ही होती थी -
सभी बड़ों को मेरे तरफ से सादर चरण स्पर्श एवं छोटों को आर्शीवाद.
आपकी आज्ञाकारी पुत्री

इन दोनों पंक्तियों के बीच पढाई के विषय में और पैसे की आवश्यकता के बारे में, बस । घर से भी जबाब आता था । पत्र तो पिता जी ही लिखते थे, लेकिन सबकी तरफ से । सम्बन्धों के नाम बता कर जैसे तुम्हारी माँ ने, दादा ने, दादी ने, बुआ ने । इन सभी ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है और छोटी, छोटका ने दीदी को नमस्ते कहा है । पत्र में उसके बाद शुरू होता था निर्देशों की लम्बी लिस्ट कि क्या करना है और क्या नहीं करना है । अन्त में होता था कि लौटती डाक से जबाब देना ।

यह तो बात हुई पुत्र या पुत्री अथवा ऐसे ही अन्य परिवारिक सम्बन्धियों द्वारा लिखी गई चिट्ठियों की ।

लेकिन साहब ऐसा मत समझिए कि चिट्ठियों की इतनी ही उपयोगिता थी । नहीं साहब ! चिट्ठियों का सही उपयोग तो उस समय होता था जब नया-नया एकदम ताजा यौवन, लोगों के जीवन में दस्तक देना शुरू करता था । अब साहब वो जवानी ही क्या जिसमें कोई कहानी न हो ! फिल्मों में भी इसका बेहद खूबसूरती से वर्णन किया गया है । खैर, फिल्मों की चर्चा नहीं करते, आज लोगों के प्रेम पत्रों की ही चर्चा करते हैं । प्रेमपत्रों में भी शुरुआती पंक्ति एक ही तरह की होती थी (हिन्दी भाषियों के लिए विशेषकर) और वह होती थी -- मेरी प्रिय राजकुमारी या राजकुमार, रोज सपने में आनेवाले या आनेवाली, राजकुमारय/परी आदि । अन्त भी एक जैसा ही होता था, जैसे- तुम्हारा/तुम्हारी दीवाना/दीवानी, तुम्हारे सपने का राजकुमार / सपनों की राजकुमारी, चरणों का दास या दासी, तुम्हारे दर्शन का प्यासा या प्यासी आदि-आदि ।

अब साहब शुरुआती पंक्तियों और अंत की पंक्तियों के बीच में होता अपने प्रेम की पराकाष्ठा दिखाने का वर्णन जिसकी शुरुआती पंक्ति भी कुछ ऐसी ही होती थी - लिखता/लिखती हूँ खत खून से स्याही न समझना, मरता/मरती हूँ तेरी याद में जिन्दा न समझना । अब यह शेर किसने लिखा भगवान जाने! लेकिन इसका जितना बखूबी से प्रयोग प्रेमपत्रों में प्रेमी व प्रेमिकाओं ने किया है वैसा अन्य किसी शेर या पंक्ति का नहीं हुआ होगा । हद तो तब हो जाती थी जब भाई लोग लाल रोशनाई से खत लिखते थे लेकिन उसी पत्र में लिखते थे कि मैंने यह चिट्ठी अपने खून से लिखा है । लेकिन यह भी सत्य है कि कुछ प्रेमी व प्रेमिकायें कभी-कभी वास्तव में खून से पत्र लिखते थे । एक ऐसा ही पत्र कभी मेरे हाथ में लग गया था और मुझे बिना पैसा खर्च किये पिक्चर देखने और उस जमाने में होटल में नाश्ता करने का मौका मिला था ।

कुछ प्रेमी-प्रेमिकायें पत्र लिखते समय इतने भावुक हो जाते थे कि उनके आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगती थी जिसकी दो चार बूँदें चिट्ठियों पर भी पड़ जाया करती थी । इन बूँदों के दाग चिट्ठियों पर स्पष्ट दिखाई पड़ते थे । उसके बाद शेरो-शायरी और प्रेम प्रकट करने वाले गीत व कविताओं की कुछ पंक्तियाँ लिखी रहतीं थीं । ये पंक्तियाँ हिन्दी व ऊर्दू या किसी अन्य भाषा के मशहूर कवि या शायर जिनमें गालिब से लेकर हरिवंश राय बच्चन, महादेवी, निराला, नीरज मुख्य हैं, से उधार लीं जाती थी । अगर कोई नहीं मिलता था तो भाई लोग अपनी ओर से कुछ भी किसी के नाम पर लिख देते थे । तमाम तरह के वादे, शिकायतें, मान-मनौव्वल और कभी-कभी मनौती भी लिखा रहता था । लिफाफे का उपयोग उस समय कुछ प्रेमियों द्वारा गुलाब की कुछ पंखुड़ियाँ भेजने या चुटकी भर सिन्दूर भेजने में भी किया जाता था ।

अब कोई यह न सोचे कि प्रेमपत्रों में प्रेम ही प्रेम होता था । नहीं साहब ! धमकियाँ भी होती थीं और वह भी बड़ी भयंकर किस्म की धमकियाँ होती थीं । कुछ धमकियाँ तो मुझे आज भी याद हैं जैसे मेरा मरा हुआ चेहरा देखना, मेरी लाश से गुजरना आदि-आदि । लेकिन सामान्यतः हल्की-फुल्की धमकियाँ ही होती थीं जैसे मुझे भूल जाओ, मुझे आगे से कोई खत नहीं लिखना, जब-तक यह चिट्ठी तुम्हें मिलेगी मैं किसी और की हो चुकी होऊँगी, आदि-आदि । इन्हीं धमकियों को ध्यान में रख कर ही गीतकार गोपालदास नीरज ने लिखा -

"कारवां गुजर गया, हम गुबार देखते रहे
और हम खड़े-खड़े, दूर के मकान से
पालकी लिए हुए कहार देखते रहे!"

जाने-माने कवि श्री उदय प्रताप जी का एक प्रसिद्ध शेर है -

हर फैसला होता नहीं सिक्का उछाल के
ये दिल का मामला है ज़रा संभाल के
मोबाइल और इंटरनेट वाले क्या समझेंगे
कैसे रख देते थे ख़त में कलेजा निकाल के

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज (मिलेट) वर्ष 2023

- नयना केळसकर
सहायक पर्यवेक्षक

भारत ने वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज के लिए आठ प्रकार के अनाजों - बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदो को शामिल किया है ।

भारत के प्रस्ताव पर 72 देशों के समर्थन के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया है। भारत में इसको लेकर कई तरह की तैयारियाँ चल रही हैं। एक तरफ केन्द्र और राज्य सरकारें किसानों को मोटे अनाज उगाने के लिए प्रेरित कर रही हैं, तो वहीं लोगों की थाली तक इसे पहुंचाने के लिए भी जागरण अभियान चलाया जा रहा है क्योंकि लोगों को अभी तक इनके बारे में जानकारी नहीं है। विशेष तौर पर शहरों में गेहूँ और चावल ज्यादा प्रचलन में है। पोषक अनाज अथवा मोटा अनाज (मिलेट) खाने से पेट जल्दी भरता है । वजन कम करने मे भी यह सहायक होता है ।

यह लेख आपको पोषण से भरपूर इन्हीं आठ मोटे अनाजों की जानकारी तथा रेसिपी से परिचित कराने की एक कोशिश है । महाराष्ट्र मे रागी, बाजरा, ज्वारी, कोदो का थोड़े बहुत पैमाने पर प्रयोग किया जाता है।

बाजरा (Pearl Millet)

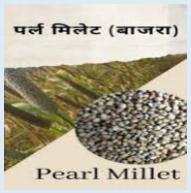

बाजरा सबसे ज्यादा उगाए और खाए जाने वाला मोटा अनाज है, जिसकी सबसे ज्यादा खेती भारत और अफ्रीका में की जाती है। बाजरा को हर तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है। कम सिंचाई वाले इलाकों के लिए बाजरा (Pearl Millet) की फसल वरदान है।

प्रोटीन, फाइबर, अमीनो एसिड समेत कई न्यूट्रिएंट से भरपूर इस मिलेट से ब्रेड, दलिया, कुकीज समेत कई व्यंजन बनाए जाते हैं। बाजरा ठंडी के सीज़न मे ज्यादा तर खाया जाता है।

बाजरा के लड्डू की रेसिपी

500 ग्राम बाजरा का आटा, 10 मिनट मध्यम गैस पर सेंक लीजिए, इसमें 250 ग्राम गुड़ बारीक काट कर, बारीक कटे अपने पसंदीदा ड्रायफ्रुइट्स, 100 ग्राम नारियल का सूखा बुरादा, 100 ग्राम गोंद को घी या तेल में तल लीजिए । फूले हुये गोंद को कटोरी से बारीक कर दीजिए । उसे अगर ज्यादा पौष्टिक बनाना है तो उसमें मेथी पाउडर 50 ग्राम, 50 ग्राम सौंठ पाउडर 200 ग्राम घी के साथ मिला दीजिए । इसके बाद अच्छे से मिक्स करके लड्डू बना लीजिए । ऐसे लड्डू सिर्फ बाजरा का आटा, नारियल का सूखा बुरादा, गुड़ और घी के साथ में ही अच्छे लगते हैं।

रागी (Finger Millet) इस अनाज का रंग लाल-भूरा और स्वाद अखरोठ जैसा होता है । रागी को भी सूखा और कम पानी वाले इलाकों में उगाया जा सकता है । यह अनाज हर तरह की मिट्टी में पैदा होकर भी प्रोटीन विटामिन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन बी जैसे कई-पौष्टिक तत्वों से भरपूर होता है । इसके नियमित सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रैशर जैसी बीमारियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है ।

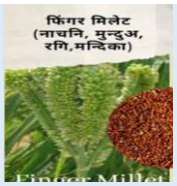

रागी/नाचनी के लड्डू बनाना बहुत आसान है। आप सुबह शाम कभी भी इसे खा सकते है। इसकी रेसिपी इस तरह है- 200 ग्राम नाचनी का आटा, 10 मिनट मध्यम गैस पर सेंक लीजिए, इसमें 50 ग्राम बारीक कटे खजूर, 50 ग्राम नारियल का सूखा बुरादा, आपको ज्यादा मीठा चाहिए तो गुड़ को 100 ग्राम कर लीजिए । गुड़ को बारीक़ काट कर या उसकी पाउडर मिलती है वह 50 ग्राम घी के साथ मिला दीजिए और सब अच्छे से मिलकर लड्डू बना लीजिए। यह लड्डू सिर्फ रागी का आटा, गुड़ और घी के साथ में ही अच्छे लगते हैं। आप इसमें अपने पसंदीदा ड्रायफ्रुइट्स मिला सकते हैं।

रागी से तुरंत डोसे भी बना सकते हैं । 200 ग्राम आटा, 100 ग्राम दही, 50 ग्राम सूजी और स्वादानुसार नमक ले लीजिए । दही को थोड़ा फेंट लें । इसमें रागी का आटा और सूजी मिला दें, ज़रूरत के हिसाब से पानी मिलाकर डोसे के उपयुक्त आटा बना लीजिए । दस मिनट के बात आटा डोसे बनाने के लिए तैयार हो जाएगा । आप चाहें तो इसमें प्याज़, टमाटर, हरी मिर्च, बारीक कटा हुआ अदरख आदि डालकर उत्थपम भी बना सकते हैं।

कंगनी (Foxtail Millet)

कंगनी को एशियाई देशों में उगाया जाता है । इस मिलेट का दाना पीला होता है जिसे दलिया से लेकर पुलाव जैसे कई व्यंजन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। कम वर्षा वाले इलाकों में उगने वाली कंगनी (Foxtail Millet) प्रोटीन, फाइबर, आयरन, पोटेशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होती है। कंगनी का स्वाद भी काफी हद तक अखरोट की तरह ही होता है ।

चेना Proso Millet

चेना एक ऐसा मोटा अनाज है जो पूरी दुनिया में उगाया जाता है । भारत के साथसाथ यूरोप-, चीन और अमेरिका में इससे सूप, दलिया और नूडल बनाए जाते हैं। यह मिलेट चर्बी और कोलेस्ट्रॉल से मुक्त होता है । साथ ही चेना (Proso Millet) प्रोटीन, फाइबर, विटामिन बी, आयरन और जिंक समेत कई विटामिन और खनिजों का मुख्य स्रोत होता है ।

सांवा (Barnyard Millet)

सांवा को देश के अलग-अलग भागों में ऊडालू या झंगोरा के नाम से भी जानते हैं। सांवा का इतिहास भी बाकी मोटे अनाजों की तरह हजारों साल पुराना है । इसमें मौजूद पोषक तत्व - फाइबर, प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन बी आदि शरीर को विशेष ऊर्जा देते हैं ।

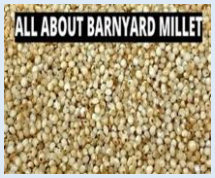

इसके नियमित सेवन से सूजन, हृदय रोग और मधुमेह का खतरा कम होता है । किसान भी सांवा उगाना पसंद करते हैं क्योंकि इसमें कीट नहीं लगते और किसी फसली बीमारी की संभावना भी कम होती है ।

ज्वार Sorghum / Indian Millet

मिनरल, प्रोटीन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, कैल्शियम और आयरन समेत कई पोषक तत्वों से भरपूर ज्वार के दानों को लोग भूनकर खाते हैं । ज्वार के आटे से बना काजल आँखों को ठंढ़क देता है और कई रोगों को भी दूर करता है । खाँसी-जुकाम होने पर ज्वार के दानों को गुड़ में मिलाकर खाया जाता है ।

ज्वार के बड़े बनाने की विधि - 200 ग्राम ज्वार का आटा, प्याज, 2-3 हरी मिर्च, 1-1 चम्मच धनिया, सौंफ, थोड़ा अदरख और लहसुन मिक्सर से बारीक़ कर लीजिए। 2 चम्मच तेल डाल कर ज्वार के आटे में प्याज का मिश्रण हरा धनिया स्वादानुसार नमक डाल दीजिए। इसको अच्छे से मिला कर इसके छोटे छोटे पूरी बना कर तल लीजिए। यह दो दिनों तक चलेगा।

कुटकी (Little Millet) - कुटकी के ज्यादातर गुण चेना से मिलते हैं । इसकी खेती करना किसानों के लिए बहुत आसान है । इसके सेवन से अनेक फायदे होते हैं । कुटकी की फसल 65 से 75 दिनों में पक जाती है । कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से लेकर डायबिटीज को नियंत्रित करने में कुटकी (Little Millet) को असरदार माना जाता है । इसमें कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की मात्रा भी अधिक होती है ।

कोदो (Kodo Millet) - कोदो एक पारंपरिक अनाज है । औषधीय गुणों से भरपूर कोदो के दाने काफी छोटे होते हैं लेकिन इसकी फसल धान की तरह ही लगती है।

लाल भूरे रंग के कोदो के दानों में कैंसर, मधुमेह और पेट के रोग दूर करने की शक्ति होती है । इसमें मौजूद प्रोटीन, फाइबर और कार्बोहाइड्रेट शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं ।

मोटे अनाज मनुष्य को प्रकृति का अद्भुत उपहार हैं । पहले के ज़माने में ऐसे अनाजों को खानेवाले अक्सर ग़रीब लोग होते थे । लेकिन समय का पहिया जब घूमता है तब अच्छे-अच्छे घूम जाते हैं । अब यही मोटे अनाज अमीर वर्ग के स्वास्थ्य की देखभाल कर रहे हैं । अन्तर्राष्ट्रीय पोषक

अनाज (मिलेट) वर्ष में हम सभी इन पोषक अनाजों को महत्व को समझें और अनावश्यक प्रदर्शन से बचते हुए अपने-अपने स्वास्थ्य के अनुकूल इन पोषक अनाजों से बने भोजन को ग्रहण करें ।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

न्याय : देर या अँधेर

- श्रीमती वीणा शिरशाट, पर्यवेक्षक

मेरे पिताजी एक अस्पताल के प्रशासन विभाग में लेखा-अधिकारी के रूप में कार्यरत थे जो राज्य कामगार बीमा योजना के अंतर्गत आता था । वे 1991 में सेवानिवृत्त हुए । अस्पताल के कर्मचारियों के लिए ग्रैच्युटी की सीमा बढ़ाने के संदर्भ में मामला न्यायालय में लंबित था । पिताजी की सेवानिवृत्ति के पश्चात मामले पर सुनवाई हुई और ग्रैच्युटी की सीमा बढ़ाई गई । सेवानिवृत्त कर्मचारियों को बकाया राशि का भुगतान नहीं किया गया । कई वर्षों तक पत्राचार जारी रहा, पर अस्पताल प्रशासन इस मामले में कुछ भी नहीं कर रहा था । मेरे पिताजी ने इस संदर्भ में अस्पताल प्रशासन पर मुकदमा दायर कर दिया । तारीख पर तारीख तथा वकीलों के गैर हाजिर होने के कारण मुकदमा लंबा खिंचता चला गया तथा कोई भी नतीजा नहीं निकला । पिताजी हर तारीख पर कोर्ट के चक्कर लगाते और नाराज होकर लौटते । यह प्रश्न पैसों का नहीं, आत्मसम्मान का था । यह क्रम लगभग 8-9 सालों तक लगातार चलता रहा ।

सन् 2010 में मेरे पिताजी का आकस्मिक निधन हो गया । अंतिम क्षणों में भी उन्हें इस बात का क्षोभ था कि उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है । पिताजी के क्षोभ में सभी परिजनों भी उनके साथ थे । एक वर्ष बीतने के बात वार्षिक श्राद्ध का दिन था । मैंने पिताजी की इस संदर्भ की फाइल ले ली, यह सोचकर कि इस मामले को जहाँ तक हो सके, आगे बढ़ाया जाए । मुझे पता चला कि श्रम-आयुक्त का कार्यालय मुंबई के ताड़देव एयरकंडिशन मार्केट से स्थानांतरित होकर मुंबई के बाँद्रा-कुर्ला संकुल जिसे बीकेसी भी कहते हैं, में आ गया था । यह स्थिति मेरे लिए अत्यधिक अनुकूल थी क्योंकि मेरा कार्यालय भी बीकेसी में ही स्थित था । एक दिन मैं श्रम-आयुक्त के कार्यालय पहुँची । मेरे अनुरोध पर पिताजी की फाइल ढूँढ़ने का काम शुरु हुआ । इस कार्यालय के कर्मचारी अच्छे लोग थे । सबने अच्छा सहयोग किया । इसी बीच मैं श्रम-आयुक्त महोदय से मिली और उन्हें पूरे घटनाक्रम को विस्तार से बताया । संबंधित कागजात देखने के बाद श्रम-आयुक्त महोदय अस्पताल प्रशासन से काफी नाराज हुए । उन्होंने कर्मचारियों मामले की पुनः जाँच करने के निर्देश दिए । नए सिरे से पत्राचार भी शुरु हो गया ।

किंतु अस्पताल प्रशासन इन सारी बातों से बेखबर और उदासीन था, न किसी पत्र का जवाब देता और न ही फोन उठाता । इसी दौरान मैंने अस्पताल प्रशासन से इस मामले के संदर्भ में चर्चा की तथा सभी आवश्यक कागजात प्रस्तुत किए । मैंने अस्पताल प्रशासन को बताया कि अपने अधिकारों की माँग करते-करते मेरे पिताजी परलोक सिधार गए, परंतु उन्हें न्याय अब तक नहीं मिला । उनकी पुत्री होने के नाते मेरा यह नैतिक दायित्व है कि मैं अपने स्वर्गवासी पिताजी को न्याय दिला सकूँ । श्रम-आयुक्त के

कार्यालय में कोशिश करते-करते इसी तरह से दो साल बीत गए । मामला आगे नहीं बढ़ रहा था । कोई भी निर्णय नहीं आ रहा था । तारीख पर तारीख तथा वकीलों की गैर-हाजिरी का सिलसिला जारी था । हारकर मैंने एक दिन यों ही श्रम-आयुक्त जी से मिलकर फिर से पूरे मामले की जानकारी दी । उन्होंने आवश्यक जाँच पड़ताल के बाद अस्पताल के लिए अंतिम सूचना जारी कर दिया जिसमें सूचित किया गया था कि बकाया ग्रैच्युटी की रकम ब्याज सहित संबंधित पक्ष को प्रदान किया जाए । ऐसा न करने पर अस्पताल प्रशासन को कहा गया कि आपकी परिसंपत्तियों को जब्त करके इसका भुगतान किया जाएगा । इस बार अस्पताल प्रशासन जाग उठा । जो प्रशासनिक अधिकारी मेरा फोन उठाने को तैयार नहीं थे वे मुझे फोन करने लगे तथा अनुरोध करने लगे कि मैं मामला यहीं खत्म कर दूँ । वे लोग इस साल के बजट में ग्रैच्युटी रकम का ब्याजसहित प्रावधान करने को राजी हो गए थे । अस्पताल प्रशासन ने श्रम-आयुक्त महोदय से इस संबंध में बात भी की । लेकिन श्रम-आयुक्त अस्पताल प्रशासन की कारगुजारियों से काफी असंतुष्ट और नाराज थे । बातचीत के क्रम में उन्होंने यह शर्त भी रख दी थी कि इस मामले के संबंध में भुगतान श्रम-आयुक्त के केबिन में श्रम-आयुक्त के समक्ष हो और वह भी दी गई समय-सीमा के अंदर ।

यह मेरे लिए अद्भुत अनुभव था । 10 वर्षों के संघर्ष के बाद मेरे स्वर्गवासी पिताजी को उनका अधिकार मिल रहा था । नियत तिथि को श्रम-आयुक्तजी के केबिन में मुझे ग्रेच्युटी का ब्याज सहित भुगतान किया गया ।

अब जब कभी मैं इस पूरे संघर्ष को याद करती हूँ तो एक अलग तरह की आत्म-संतुष्टि उभरती है । मेरा मन पहले भी कहता था, आज भी कहता है कि न्याय के घर देर भले ही हो, पर अँधेर नहीं होती । शर्त सिर्फ एक है कि न्याय के लिए संघर्ष पूरी ऊर्जा से और सही तरीके से किया जाए । आज मेरे पिताजी मेरे साथ नहीं हैं, पर न्याय के लिए मेरा जुझारुपन उन्हीं की तो देन है ।

पिताजी की ग्रैच्युटी के पैसों को हमलोगों ने गाँव के विद्यालय के जीर्णोद्धार में लगा दिया । मेरे पिताजी यदि जीवित होते तो वे भी शायद यही करते । शिक्षा का मंदिर ही तो अपने शिक्षुओं में जुझारुपन का दीपक जलाता है ।

“हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है ।" - शंकरराव कप्पीकेरी

शिक्षा का महत्व

- सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

शिक्षा हमें पृथ्वी पर अन्य जीवित प्राणियों से अलग करती है। यह मनुष्य को पृथ्वी का सबसे बुद्धिमान प्राणी बनाती है। यह मनुष्यों को सशक्त बनाती है और उन्हें जीवन की चुनौतियों का कुशलता से सामना करने के लिए तैयार करती है।

शिक्षा मनुष्य के अंदर अच्छे विचारों को भरती है और बुरे विचारों को निकाल बाहर करती है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। इससे मनुष्य के अंदर मनुष्यता आती है । शिक्षा के महत्व पर संस्कृत में एक प्रसिद्ध श्लोक हैः-

> विद्या ददाति विनयम् विनयाद् याति पात्रताम् । / पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम् ।।

अर्थात् विद्या मनुष्य को विनम्रता प्रदान करती है । विनम्रता से योग्यता (पात्रता) आती है । पात्रता से धनार्जन संभव हो जाता है । धन से धर्म संबंधी कार्य किए जा सकते हैं जिससे मनुष्य को सुख मिलता है ।

आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा मानव जीवन में मुख्य भूमिका निभाती है। आजकल, शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत तरीके हैं। शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल दिया गया है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद नियमित रूप से अथवा दूरस्थ शिक्षा (डिस्टेंस एडुकेशन) के माध्यम से नौकरी के साथ-साथ पढ़ाई भी कर सकते हैं । भले ही देश में शिक्षा का तेजी से व्यवसायीकरण हो रहा है, परंतु सरकार अपनी ओर से ऐसे अनेक कदम उठाती है जिससे शिक्षा समाज के अंतिम छोर पर स्थित मनुष्य तक पहुँच पाए । दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क पर प्रवेश ले सकते हैं। अन्य छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। अपने कौशल और ज्ञान को बढ़ाने का सबसे अच्छे तरीके अखबारों को पढ़ना, टीवी पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को देखना, अच्छे लेखकों की किताबें पढ़ना आदि हैं। शिक्षा हमें अधिक सभ्य और बेहतर शिक्षित बनाती है। यह समाज में बेहतर पद और नौकरी में कल्पना की गए पद को प्राप्त करने में हमारी मदद करती है।

वास्तव में शिक्षा ही समाज और राष्ट्र की तरक्की का आधार है । शिक्षा से ही मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता और ज्ञान का विस्तार संभव हो पाता है । प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक किसी विद्यार्थी का कोई भी शिक्षण काल हो, यह शिक्षा ही है जो राष्ट्र के भविष्य अर्थात् विद्यार्थी का चरित्र निर्माण करती है एवं उसे ज्ञान, विज्ञान एवं तरक्की से जोड़ती है । शिक्षा ऐसी हो जो विद्यार्थी में ज्ञान के साथ ही सेवा, आत्मविश्वास और दूरदृष्टि को जागृत कर सके और उसे आत्मनिर्भर बना सके । शिक्षा ऐसी हो कि विद्यार्थी में नौकरी के पीछे भागने की ललक न हो बल्कि उसे उसकी रुचि को

विकसित करने में सहायक हो । जब व्यक्ति रुचिपूर्वक कोई कार्य करेगा तो वह भागेगा नहीं, बल्कि ज्ञान व तकनीक के नए आयामों को विकसित करेगा और मूल्यों के प्रति सजगता उसे सेवा को तत्पर करेंगे । मात्र ज्ञान होने से समाज में विकास की पूरी संकल्पना साकार नहीं हो सकती है । ज्ञान को सही दिशा देने के लिए जीवन-मूल्यों के प्रति सजगता ज़रूरी है । ज्ञान जहाँ दशा सुधारता है वहीं जीवन-मूल्य दशा को सही दिशा देते हैं । सही दिशा और दशा समाज व राष्ट्र निर्माण को सम्पूर्ण आकार देते हैं ।

"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"

- वाल्टर चेनिंग

यह है मुंबई मेरी जान...

- श्री सुमेश जी. नायर, स.ले.प.अ.

अरब सागर पर सूर्योदय के साथ ही मुंबई महानगर के उत्साह में एक नया सवेरा जुड़ जाता है। ऊँची इमारतों से लेकर संकीर्ण गलियों तक, हर कोने से उभरती हुई अभिलाषाओं की कहानी सामने आती है। हँसमुख शोर में, शहर सभी को गले लगाता है, अवसर देता है और एक संवेदनशील भावना का ज्वार उठता है। यह सपनों का शहर, जो एक अनगिनत आकर्षणों से भरा है, हर नज़र को चमक प्रदान करता है। इसकी जीवंत ऊर्जा भागमभाग से भरी गलियों में धधकती है, जहां विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों के लोग मिलते हैं।

मुंबई की आत्मा इसके उद्यमी निवासियों में प्रतिष्ठित है, जो अपने सपनों को कपड़ों की तरह पहनते हैं। दिल में आशा और सपने लेकर, वे भीड़ भरी लोकल ट्रेनों और खचाखच भरे बाजारों के बीच संचरण करते हैं। इसलिए इस सपनों के शहर में, भिन्नता फलित होती है। बॉलीवुड के सुपरस्टार से साधारण डब्बावाले तक, मुंबई टैलेंट और दृढ़ता का एक समावेश रखता है। कलात्मकता इसके थिएटरों और गैलरियों में सुकून पाती हैं, जबकि भोजन प्रेमियों को स्वादिष्ट भोजन का भव्य आनंद मिलता है। यह एक ऐसा शहर है जो विरोधाभासों का आलिंगन करता है, जहां परंपरा विद्यमानता के साथ एकत्र हो जाती है। इस शहर में पड़ोसी परिवार बन जाते हैं और अजनबी मित्र ।

यह लेख आपको मुंबई की विवधता को खोजने में मदद करेगा, जो न केवल उसके लोगों की अटलता और संदर्भ को प्रकाशित करेगा, बल्कि उसके प्रसिद्ध स्मारकों का परिचय भी कराएगा । आप जब कभी मुंबई आएँ, तब इन रोचक स्थानों के आकर्षणों से ओतप्रोत होकर ही लौटेः-

1. मुंबई के दक्षिणी भाग में स्थित **गेटवे ऑफ़ इंडिया** एक प्रतीकात्मक स्मारक है और यह मुंबई के सबसे प्रसिद्ध चिह्नों में से एक है। यह ब्रिटिश राज के दौरान बनाया गया था, जो अरब सागर के खूबसूरत नज़ारों का आनंद देता है और स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

2. गेटवे ऑफ़ इंडिया से एक फेरी राइड लेकर **एलीफेंटा द्वीप** पर जा सकते हैं ताकि आप यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहरों में सूचीबद्ध जंगली गुफाएँ देख सकें। इसमें भारतीय संस्कृति, कला और इतिहास संबंधी विचित्र मूर्तियाँ और संभावनाशील दर्शन हैं।

3. मरीन ड्राइव, जिसे 'Queen's Necklace' भी कहा जाता है, अरब सागर के साथ एक चित्रवत नौगमन है । इस 3.6 किलोमीटर लंबे, चारों ओर बिखरे हुए इमारतों के सामने फैले समुद्र तट के पास सूर्यास्त के समय एक दिव्य दृश्य उपस्थित हो जाता है।

4. शॉपिंग प्रेमियों के लिए कोलाबा कॉज़वे मार्केट जा सकते हैं जिसमें कपड़ों, हस्तशिल्प और प्राचीन वस्त्रों की खरीददारी की जा सकती है। यह स्थान सड़क भोजन का आनंद लेने के लिए एक आदर्श स्थान है।

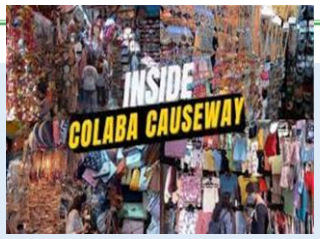

5. मालाबार हिल में स्थित हैंगिंग गार्डन में भगवान शिव के दर्शन तो होंगे ही, इसके अलावा सुकूनभरे पल भी मिलेंगे । यह खूबसूरत बगीचा मालाबार हिल की धारों पर स्थित है, जिसमें अरब सागर का अद्भुत दृश्य होता है, जहां आप आराम से घूम सकते हैं, बेंचों पर आराम कर सकते हैं, और शांतिपूर्ण वातावरण का आनंद ले सकते हैं।

6. पश्चिमी उपनगरों में स्थित जुहू बीच वहां के स्थानीय और पर्यटकों दोनों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है। यद्यपि बीच की भव्यता अब पहले की तरह नहीं है, फिर भी, आप समुद्रतट पर शांति से टहलने का आनंद ले सकते हैं, स्थानीय सड़क भोजन का स्वाद ले सकते हैं, और अरब सागर पर एक मोहक सूर्यास्त का मजा भी ले सकते हैं।

7. आध्यात्मिक अनुभव के लिए, आप प्रभादेवी में सिद्धिविनायक मंदिर जा सकते हैं। भगवान गणेश को समर्पित यह प्रसिद्ध मंदिर पूरे देश से भक्तों को दर्शन और पूजा करने के लिए आकर्षित करता है।

8. बांद्रा-वर्ली सी लिंक एक आर्किटेक्चरल महाकाव्य की तरह है, जो बांद्रा और वर्ली के आस-पास के क्षेत्रों को आपसी जुड़ाव प्रदान करता है। इस प्रसिद्ध पुल के ऊपर से सूर्योदय या सूर्यास्त के दौरान टहलने का मजा लेने के लिए जा सकते हैं, जहां मुंबई का स्काइलाइन और सागर का दृश्य खूबसूरती से आकर्षित करता है।

9. पवई नगर में स्थित पवई झील एक कृत्रिम झील है, जिसके आसपास की जगह हरी-भरी वनस्पतियों से घिरी हुई है और शहर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण प्रदान करती है। आप झील के किनारे सैर कर सकते हैं, पैडल बोट किराए पर ले सकते हैं, या सीधे झील के किनारे बैठकर शांत वातावरण का आनंद ले सकते हैं।

10. नेहरू विज्ञान केंद्र वर्ली में एक इंटरैक्टिव विज्ञान संग्रहालय है जो विभिन्न प्रदर्शनियों को प्रस्तुत करता है, जिसमें बच्चे और वयस्क, दोनों को वैज्ञानिक प्रयोगों को करने का मौका मिलता है, यहाँ

ग्रहमंडलीय कार्यशालाओं में शामिल हो सकते हैं और रोमांचक जगत को खोजने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

11. मुंबई एक विविधता से भरा संस्कृतिक कार्यक्रमों का भी एक समृद्ध स्रोत है, जैसे थिएटर प्रदर्शन, संगीत संध्याएँ और कला प्रदर्शनियाँ । कला प्रेमियों के लिए, मुंबई के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में हाल ही में उद्घाटित नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र (एनएमएसीसी) एक अनिवार्य स्थल है । इसे भारतीय कला और संस्कृति को श्रेष्ठ तरीके से उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में तैयार किया गया है । यह केंद्र तीन स्तरों पर 2000 सीटों की क्षमता वाले 'ग्रैंड थिएटर' और विभिन्न आयोजनों के लिए 250 सीट की क्षमता वाले 'स्टूडियो थिएटर' के साथ है। केंद्र में एक आर्ट हाउस भी शामिल है, जो चार मंजिलों का एक विशेष कला कॉम्प्लेक्स है, जहां कला प्रेमियों के लिए कला जीवंत होती है ।

मुंबई एक ऐसा महानगर है जिसमें अनगिनत आकर्षण हैं । यहाँ आपकी रुचि के अनुसार और भी कई स्थान हो सकते हैं । हाजी अली दरगाह, बॉलीवुड स्टूडियो टूर, जीवंत क्रॉफर्ड मार्केट, धारावी स्लम्स के मार्गदर्शित भ्रमण, विश्वस्तरीय छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल), गोराई में विशेषज्ञ बौद्ध ध्यान केंद्र ग्लोबल विपश्यना पगोडा, चोर बाजार (मुंबई के विविधता से भरे हुए पक्ष की खोज करने वालों के लिए एक उत्कृष्ट स्थान), कान्हेरी गुफाएं (पुरातात्विक बौद्ध चट्टानों पर बनी) जो संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान के अंदर स्थित हैं। ये स्थान सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और खरीदारी का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करते हैं । ये स्थान मुंबई के विविध आकर्षणों के विस्तृत अन्वेषण का एक संपूर्ण अनुभव प्रदान करते हैं और आपके मुंबई यात्रा को विविध रंगों से भरते हैं । यदि आपने अपने मुंबई-प्रवास की अच्छी योजना बनाई है, और यथासंभव मुंबई की सैर की है, तो कहीं न कहीं आपका दिल भी मुंबई के लिए बोल ही उठेगा - "**ये है मुंबई मेरी जान**" ।

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो

गोपाल सिंह नेपाली

हास्यमेव जयते

- जय राम सिंह, क. अनुवादक

(**अस्वीकरण/डिस्क्लेमर** - इस लेख का कोई भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संबंध भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग से नहीं है । पाठकों से अनुरोध है कि इसे सिर्फ हास्य के लिए पढ़ें ।)

आजकल कामकाजी मानवता के दो ही बड़े सवाल हैं :- पहला, "खाना क्या बनाएं?" और दूसरा, "लेखापरीक्षा में क्या होगा?" पहले सवाल को टैकल (tackle) करने के आजकल बहुतेरे तरीके हैं, मसलन यूट्यूब, स्विगी, ज़ोमैटो आदि । इनसे भी समस्या नहीं सुलझी तो नजदीकी रेस्तराँ, टपरी, चाट आदि आदि हैं ही ! कहाँ तक गिनाया जाए, लिस्ट बहुत लंबी है । मतलब कि कोई न कोई सॉल्युशन (solution) मिल ही जाता है । असली समस्या लेखापरीक्षा की है । एक तो यह कि इस लेखापरीक्षा शब्द से ही मुझे बुखार आ जाती है । एक तो लेखा अर्थात् एकाउंट और दूसरी परीक्षा अर्थात् जाँच । बात सिर्फ लेखा की जाँच तक ही रहे तो किसी न किसी तरह हम निपट ही लें, परंतु आजकल की लेखापरीक्षा .... यह लंबा शब्द है ... इसे छोटा करते हैं .... ऑडिट ..... हाँ .... ऑडिट ठीक रहेगा । यह शब्द छोटा तो है मगर प्यारा है या नहीं यह पाठकों पर निर्भर करता है ! तो हाँ, ऑडिट हमारी असली समस्या है, जी !

ऑडिट के दो पक्ष होते हैं - पहला ऑडिटर, जो ऑडिट करता है और दूसरा ऑडिटी अर्थात् जिसके काम का ऑडिट होता है । यह दोनों ही पक्ष ईश्वर की बनाई एक विशेष प्रकार की रचना होती है जिसकी विशेषताओं के बारे में इस लेख में आगे धीरे-धीरे प्रकाश मिलेगा । इन दोनों ही पक्षों की अपनी वैचारिकी (mindset) होती है । सीधे-सीधे यों कहें कि ऑडिटर की समझ से ऑडिटी ने सारे काम ग़लत किए हैं तो ऑडिटी की समझ से ऑडिटर बेसिर-पैर के टाँग अड़ाते हैं । एक ऑडिटर सामान्यतया जब ऑफिस से घर पहुँचने में देरी कर दे, तो घरवालों के सौ सवाल तैयार मिलते हैं । लेकिन वही ऑडिटर जब ऑडिट में जाता है तो घरवाले ही कहते हैं कि जल्दी मत करना, सारे काम निपटा कर ही आना, कहीं फिर से न जाना पड़े । कई ऑडिटर तो इस सद्भावना का पूरा फायदा भी उठाते हैं और ऑडिट के बहाने ही जहाँ-तहाँ से घूम भी आते हैं । कभी-कभी तो ऑडिटरों को भी शक होने लगता है कि उनके घरवाले कहीं ऑडिटी पक्ष से पूर्व-परिचित तो नहीं । ख़ैर, हमारा विषय अलग है ।

ऑडिट शब्द सुनते ही कार्यालय का एक विशेष दृश्य आँखों के सामने कौंधने लगता है । बड़ा-सा टेबल, उसके चारों तरफ बैठी ऑडिट टीम .... और टेबल पर काजू, बादाम, पिस्ता, मिठाइयाँ, समोसे .... यह अंतहीन सिलसिला है । सुना है कि दुनिया में काजू का जितना उत्पादन होता है उसकी आधी मात्रा ऑडिट टेबल पर ही खर्च हो जाती है । ऑडिट से संबंधित कुछ टर्म दिमाग में पीएसएलवी की तरह उछलने लगते हैं - जैसे ट्रायल बैलेंस, इंकम और एक्सपेंस स्टेटमेंट, कैशफ्लो रजिस्टर ..... यहाँ भी एक अंतहीन सिलसिला है । जब इनमें से अधिकांश टर्मों से परिचय होने लगता है तो दिल में एक प्रश्न उठता हैक्या ये सारे" - काम के होते हैं ?"

मेरे एक सीनियर जो इस दुनिया की दुर्गतियों से अब मुक्त हो चुके हैं, ने सिखाया था कि ऑडिट से निपटने का बेस्ट तरीका है, अपनी कुर्सी से बाहर निकलो । लेकिन ऐसा करने के लिए आपको पहले मानना होगा कि आपकी आत्मा आपके कागजातों में बसती है । लो भाई, आत्मा भी अब शरीर से निकलकर कागजों में घुस गई ! शायद इसीलिए अधिकतर ऑडिटर सेवानिवृत्ति के बाद इस भू-धरा को ज्यादा परेशान नहीं करते !

अक्सर सुनने में आता है कि इस दुनिया में समय के साथ सब कुछ मैनेज हो जाता है । लेकिन इस शिक्षा का दम तब घुटने लगता है जब ऑडिट टीम ऑफिस में आकर बैठ जाती है । न मैनेज हो पाता है और न गार्बेज ही हो पाता है । ऑफिस में सौ से अधिक फाइलें होंगी, लेकिन उन्हें पता है कि कौन सी फाइल में गड़बड़ी है । ऑडिटी मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा होता है कि हे ईश्वर, इसकी बुद्धि ऐसी फिरा दो कि यह और कुछ भी माँग ले, सिर्फ वह फाइल न माँगे । लेकिन वह भी तो ऑडिटर है - निन्यानवे फाइलों को छोड़कर बिल्कुल वही फाइल मँगवाते हैं जो इस कार्यालय की कार्य-कुशलता का पोस्टमार्टम करने के लिए काफी होता है। सब कुछ इतनी जल्दी घटित होता है कि लगने लगता है दिन-रात के चौबीस घंटे अपना विस्तार पाकर द्विगुणित या त्रिगुणित होने लगे हैं । समय बीतता ही नहीं, पहाड़ जैसा लगने लगता है । जो समय कुछ पलों में बीत जाता था, अब घंटों में भी नहीं बीतता ।

कभी-कभी मन में निर्वाणी भाव भी जगने लगते हैं - यह जीवन ही मिथ्या है । ऑडिट भी तो जीवन का ही एक अंग है और इसलिए ऑडिट भी मिथ्या ही है । इन मिथ्या वस्तुओं से क्या डरना ? पर, हाय रे विधाता ! निर्वाण का सुख कामकाजी आयु में प्राप्त भी तो नहीं होता !

ख़ैर, मेरे ऑफिस में ऑडिट चल रहा है, यह एक कटु सत्य है । अभी ऑडिटर लोग लंच करने गए हैं, गए क्या हैं, कहिए कि ले जाए गए हैं ! अभी मेरे पास दो विकल्प हैं - थोड़ा हँस लूँ या आज के ऑडिट में जितने बम फूटे हैं उनकी धमक से घायल होता रहूँ ।

जो होगा वह देखा जाएगा । मुझे याद आ रही है एक छोटी सी कहानी । चलिए, उसे ही सुनाता हूँ । मेरा पिछला कार्यालय एक छोटा-सा कार्यालय था । हँसी-खुशी का माहौल था । सुबह-सुबह लोग आते, जितना काम होता, उसे निपटाते और मौका मिलते ही ठहाके लगाकर हँसते । बुज़ुर्गों से आपने भी सुना ही होगा कि हर अच्छी चीज़ को नज़र लग जाती है, और हँसी को तो सबसे पहले ! उस कार्यालय की हँसी को भी किसी की नज़र लग गई । शाम को संदेश आया कि कल से ऑडिट टीम आ रही है । ऑडिट टीम के आने की ख़बर ऑडिट टीम के सचमुच आ जाने से भी अधिक भयावह होती है । इस कार्यालय के लोगों का स्वास्थ्य अच्छा था । न ब्लड-प्रेशर, न ब्लड-शुगर और न ही कोई लाइफ स्टाइल डिजीज । क्योंकि सब हँसते रहते थे । ऑडिट टीम के आने की खबर ने हास्य को सबसे पहले निगला । कोई भी व्यक्ति घर नहीं गया । रात भर कार्यालय खुला रहा । सारे रिकॉर्ड दुरुस्त किए गए । ऑडिट टीम के आने-जाने, खाने-पीने और ठहरने का ऐसा इंतजाम किया गया जैसा कोई अपनी बेटी के विवाह में

बरातियों के ठहरने के लिए भी नहीं करता । सब कुछ व्यवस्थित देखकर लोगों को घर भेजा गया । घर क्या भेजा गया, कहिए कि भेजकर बुलाया गया । तारीख बदल ही चुकी थी, सूर्योदय होने वाला था । अब बचा क्या ? घर जाओ, नहाओ, तैयार हो जाओ और ऑफिस आ जाओ ।

ऑडिट टीम आ गई । लाइन लगाकर सारे स्टाफ से परिचय कराया गया । टीम के लिए विशेष कमरा था । बड़े से टेबल के चारों तरफ ऑडिट टीम पसर गई । पूरे कार्यालय में नीरव शांति थी । उस कार्यालय में जहाँ साइलेंस शब्द होता ही नहीं था ! सुना है कि ईश्वर सबको बराबर समझता है अर्थात् पूर्ण साम्यवादी है । कभी न कभी इन ऑडिटरों के कार्यालय में भी ऑडिट होता है । उस समय इनकी वही स्थिति होती है जो सामान्यतया हर ऑडिटी की होती है । हर कार्यालय में कुछ ऐसे मसखरे होते हैं जो बातों के धनी होते हैं । उनके कामों को देखकर उनके सीनियर या जूनियर बस यही कहते हैं कि भाई तुम रहने ही दो, किसी और से करा लेंगे । लेकिन ऑडिट टीम के आगमन पर इन मसखरों का भाव इस तरह बढ़ता है जैसे बजट भाषण के बाद किसी विशेष शेयर का भाव। वह व्यक्ति आज सबसे प्यार पाता है, बॉस की नजरों में तो वह तारनहार जैसा हो जाता है । उसे तमाम तरह के चुटकुलों से लैस किया जाता, मानो ये चुटकुले नहीं बल्कि मिसाइलें हों - देशीय, अन्तर्देशीय या क्रूज मिसाइलों की तरह जिनका वार कभी खाली न जाता हो । ऑडिट टीम को ऐसे हँसाना ... वैसे हँसाना ... इतना हँसाना कि वे अपना मूल काम भूल जाएँ ... आदि आदि । इधर ऑडिटवाले भी कई घाट का पानी पी चुके होते हैं। उन्हें भी मालूम होता है कि उन्हें चुटकुले क्यों सुनाए जा रहे हैं । इस द्वंद्व में जो जीता वही सिकंदर !

टीम ने सारे कागजात खंगाले और कुछ ऑब्जर्वेशन दिए । लंच का टाइम हुआ । फिर अपराह्न में टीम बैठ गई । समय पाँच मिनट, दस मिनट, आधा घंटा ..... इस तरह बीत रहा था । शायद ऑडिट टीम और घड़ी की सूई में पिछले जन्म का कोई आपसी समझौता हो । क्या मजाल कि घड़ी की सूई जल्दी से आगे बढ़ जाए !

दिन भर के ऑब्जर्वेशनों को रात में दूर करना था । लोगों ने खूब मेहनत की और सब ठीक कर लिया। अगले दिन टीम के प्रमुख आनेवाले थे । लोगों ने समझा कि जो होना था हो चुका है, अब सब अच्छी बातें होंगी। लेकिन सोचा हुआ कभी हुआ है क्या ? अगले दिन प्रमुख जी आए और ऑडिट शुरु हो गया ।

आज का ऑडिट देखकर तो विश्वास हो गया कि इस देश में कुछ भी असंभव नहीं है । आज ऑडिट टीम कार्यालय में हँसी की मात्रा का ऑडिट कर रही थी । रजिस्टर, फाइल, आवेदन, कम्प्युटर सब खुले थे । हँसी की माप कहीं भी दर्ज नहीं मिल रही थी । कार्यालय के लोगों ने बताया भी कि साहब, हँसी हमारी व्यक्तिगत चीज है, सरकारी नहीं जो दर्ज किया जाए । लेकिन इस समय टीम जो भी कहे वह वेदवाक्य होता है । टीम ने टोका - सरकारी ऑफिस में कोई भी चीज व्यक्तिगत नहीं होती, यहाँ तक कि हँसी भी नहीं । हँसी का रिकॉर्ड तो दिखाना ही पड़ेगा ।

आनन-फानन में हँसी का रजिस्टर बैक-डेट में खोला गया । अलग-अलग समय पर हँसी दिखाई जाने लगी । कोई पाँच मिनट हँसा था, तो कोई दस मिनट तक हँसते ही रहा था । ले-देकर रजिस्टर पूरा हो गया ।

ऑडिट टीम की फाइनल मीटिंग थी । कन्फ्रेंस हॉल में दोनों ही पक्ष जम चुके थे । ऑडिट प्रमुख ने बोलना शुरु किया - "हास्यमेव जयते" । पर यह क्या ? चारों तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा ! ऑडिट प्रमुख इस सन्नाटे को ताड़ गए, हँसते हुए फिर से बोले - "हास्यमेव जयते" । उनकी बात सुनकर पूरा हॉल ठहाकों से भर गया था । कुल मिलाकर इतना ही कहा जा सकता है कि काम-काज की लेखा-बही भले ही आँकड़ों से भरी हो, लेकिन वह चमकती तब ही है जब उसके आस-पास हास्य का अस्तित्व हो।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी

- राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

धोबी का गधा

- श्री प्रवीण नाफड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पुराने ज़माने की बात है । मदरसे में एक मौलवी साहब अपने शागिर्दों को बता रहे थे - "मैंने अपने जीवन में कई बड़े-बड़े काम किए हैं । जो भी मेरे पास आया मैंने सबों को पढ़ाया, यहाँ तक कि गधों को भी पढ़ा-लिखा कर बड़ा आदमी बना दिया । इसलिए ध्यान से पढ़ोगे तब एक दिन तुम सब भी बड़े आदमी बनकर ऊँचे ओहदों पर पहुँच जाओगे और हाकिम बन जाओगे ।"

उनकी यह बात एक धोबी ने सुन ली । वह मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ । अगले दिन चुपके से मौलवी साहब के पास आकर बोला - "मेहरबान, आप बड़े काम के आदमी हैं । मेरे पास भी एक गधा है । अगर आप उसे भी आदमी बना दें तो बड़ी मेहरबानी होगी । मेरा कोई सहारा नहीं । वह आदमी बन जाएगा तो मुझे बुढ़ापे में सहारा मिल जाएगा ।"

यह सुनकर मौलवी साहब हैरान रह गए । बोले - कहीं गधे को आदमी बनाया जा सकता है? यह तुम क्या कह रहे हो ? धोबी ने कहा कि अभी कल ही तो आप बच्चों को बता रहे थे कि आपने कई गधों को बड़ा आदमी बनाया है और वे सब हाकिम बने बैठे हैं ?

मौलवी साहब समझ गये कि वह अव्वल दर्जे का बेवकूफ है । बोले, "गधे को आदमी बनाने के दो सौ रुपये लगेंगे ।" धोबी ने दो सौ रुपया देना स्वीकार किया और अगले दिन रुपया तथा अपने गधे को लेकर मदरसे आ पहुंचा। रुपयों के साथ उसने गधे को मौलवी के हवाले कर दिया ।

काफी समय हो गया । एक दिन धोबी को अपने गधे की याद आई । सोचा, "अब तक वह ज़रूर बड़ा आदमी बन गया होगा । मौलवी साहब के यहाँ पढ़-लिखकर गधे भी आदमी बन जाते हैं । मेरा गधा इसी शहर में हाकिम बनेगा, खूब पैसे कमाएगा । घर में बहू आएगी, मेरी खूब सेवा करेगी और इस तरह मेरा बुढ़ापा मजे से कट जाएगा ।"

सोचता हुआ वह मौलवी साहब के पास पहुँचा और अपने गधे के बारे में पूछताछ की । मौलवी साहब ने बताया - "तुमने आने में बहुत देर कर दी । तुम्हारा गधा कब का आदमी बन चुका है । मैंने उसे खूब पढ़ा-लिखा दिया है । अब तक तुम नहीं आए तो सोचा कि शायद तुम उसे भूल गए हो । इसलिए वह यहाँ से चला गया है । सुना है कि वह इसी शहर में कोतवाल लगा है ।"

मौलवी साहब ने फिर कहा - "अब तुम यदि उससे मिलना चाहते हो तो सीधे कोतवाली चले जाओ, वह तुम्हें मिल जाएगा । लेकिन एक बात का ख्याल रखना । थैले में थोड़ी-सी घास अवश्य रख लेना । कहीं वह तुम्हें भूल गया हो तो घास देखकर उसे तुम्हारी याद आ जाएगी और वह तुम्हें पहचान

लेगा । ज़माना ही ऐसा आ गया है कि हाकिम बनने के बाद आदमी रिश्ते-नाते और परिजनों को भूल जाता है । इसलिए घास ज़रूर रख लेना ।“

धोबी खुशी से उछल पड़ा । लौट कर घर आया और हरी मुलायम घास उखाड़कर थैले में भर ली। बेटा कोतवाल लगा है तो हर कोई उसे जानता होगा । सड़क पर खड़े राजा के सिपाहियों से पता पूछते हुए वह कोतवाली जा पहुँचा । अन्दर घुसना ही चाहता था कि सिपाहियों ने रोक कर पूछा - कहाँ जाओगे ?

धोबी अकड़कर बोला, 'मेरा बेटा इस कोतवाली में कोतवाल लगा है, उससे मिलना चाहता हूं ।” धोबी का चेहरा देखकर सिपाही हँस पड़े । बोले, "तेरा लड़का शहर का कोतवाल कैसे हो सकता है?" धोबी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह सचमुच कोतवाल है। यकीन न हो तो मौलवी साहब से जाकर पता कर लो। मौलवी साहब ने उसे पढ़ाया-लिखाया और गधे से आदमी बना कर यहाँ लगवाया है।

सिपाहियों ने उसे पागल समझकर हवालात में बंद कर दिया । इस पर धोबी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा - “मैं कोतवाल का बाप हूँ । मैंने उसे पढ़ा-लिखाकर गधे से आदमी बनाया है । वह इतना नालायक निकला कि बाप की खोजबीन भी नहीं करता ।“ इधर कोतवाल ने जब सुना तो धोबी को हवालात से निकलवाकर पूछा - तुम कौन हो ?

उसके इस प्रश्न से धोबी को बड़ी निराशा हुई । बोला, "आज तुम इस शहर का कोतवाल बन गए हो, इसलिए अपने बाप को भी भूल गए । जानते नहीं, मैंने पढ़ा-लिखाकर तुम्हें गधे से आदमी बनाया है ।“

"क्या बकता है ?" कोतवाल डपट कर बोला ।

"बकता नहीं हूँ, सच कह रहा हूँ । एक दिन तुम गधे थे । मैं तुम्हें हरी - हरी घास दिया करता था । आज भी वैसी ही मुलायम घास तेरे लिए लाया हूँ ।“ कहते हुए धोबी ने हरी मुलायम घास निकाल कर उसकी मेज पर रख दी । उसे हद से आगे बढ़ते देख कोतवाल को गुस्सा आ गया । उठकर दो डंडे उसे जमा दिए, फिर लातों से पीटते-पीटते कोतवाली से बाहर निकाल दिया ।

इस घोर निराशा के क्षणों में भी धोबी को हँसी आ गई । बोला, “आदमी बनकर तुम सब कुछ भूल गया, पर दुलत्ती झाड़ने की आदत अभी तक नहीं गई ।“ कोतवाल ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इस बदतमीज़ को पकड़ कर ले जाओ और पागलखाने में भर्ती कर दो। यह कोई सिरफिरा है ।

सिपाही उसे पकड़कर ले गए और दूर ले जाकर छोड़ दिया। अगले दिन दुखी होकर धोबी मौलवी साहब के पास पहुँचा और कोतवाल की सारी हरकत उसे बताई । बोला, "जब वह गधा था, तब मेरे

बहुत काम आता था। कितना भी बोझ लादने पर चूँ तक नहीं करता था। मार-पिटाई से डरता था । गधा रहते हुए उसने मुझे बहुत सुख दिया, लेकिन आदमी बनकर वह मेरे किसी काम का न रहा ।

धोबी ने मौलवी साहब से विनती की कि उसे फिर से गधा बना कर मुझे वापस कर दें तो बड़ी मेहरबानी होगी। मौलवी बोला, "आदमी को गधा बनाना मुश्किल है, पर यदि तुम यही चाहते हो तो इसके लिये दुगुनी कीमत चुकानी पड़ेगी। कल सुबह चार सौ रुपया लेकर आना और अपना गधा वापस ले जाना ।"

अगली सुबह धोबी मौलवी के पास पहुँचा और गिनकर चार सौ रुपये सामने रख दिए। मौलवी ने मकान के पीछे बँधा हुआ उसका गधा खोलकर उसके सामने ला खड़ा किया । अपने गधे को पाकर धोबी ने उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुये कहा, "बेटा, आदमी बनने से अच्छा है कि तुम गधे ही बने रहो ।" यह कहकर वह उसे घर की तरफ हाँक ले चला।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है - कमलापति त्रिपाठी

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

(आपके पत्र और उसमें व्यक्त अनमोल सुझाव हमारा मार्गदर्शन करते हैं। कृपया इस अंक के बारे में भी अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँ।)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस, ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता 700-020

फोन: 033-2289/4111/12/13 फैक्स: 033-2289-4060

ई मेल:-bresdkolkata@cag.gov.in

0 8 DEC 2022

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/448

दिनांक-08.12.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान भवन,
(नौवहन) सातवीं मंजिल, प्लॉट नं. सी-2,
जी.एन. ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
मुंबई-400 051.

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "आँचल" के 17वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री जय राम सिंह जी का आलेख **'नारी'**, श्रीमती रितु मोटवानी जी का आलेख **'कुछ रह तो नहीं गया'**, श्री दीपेन्द्र कुमार राज जी का आलेख **'एक सफर'**, श्री सतीश नाफडे जी की कविता **'क्रोध का उपचार'**, श्री जिज्ञासु पंत जी की कविता **'तुम्हारे बारे में'** और श्री अजीत कुमार जी की कविता **'रूस-यूक्रेन संकट: कौन सही कौन गलत'** अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आँचल" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
हस्ता-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगाँव, गुवाहाटी
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY, MALIGAON, GUWAHATI

संख्या: प्र/10-4/2010/82 (पत्रिका)
दिनांक: 16/12/2022

2 0 DEC 2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(नौवहन)
सी -2, जी.एन. ब्लॉक, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स
मुंबई- 400051

विषय: हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक की ई-प्रति की पावती

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आँचल'के 17वें अंक ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक है। इसमें श्री जय राम सिंह की **'नारी'**, श्री तरुण बजाज की **'अपेक्षा'** एवं **'फायदे के लिए कुछ भी सही'** तथा श्री अंकित आज़ाद की **'इच्छा से लालच,लालच से विनाश'** आदि रचनाएँ विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व रुचिकर हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया
(मेरीना सिमते)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

Northeast Frontier Railway, Maligaon, Guwahati – 781 011, Assam
16

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2022-23 (Computer No. 118375)
CORRESPONDENCE(835997/2023/HINDI CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 30

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52,Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/4-ए
दिनांक:09.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

विषय : विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक:पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वि.प./आँचल/2023-24 दिनांक 18.04.2023 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सुंदर है। विशेष रूप से राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 संबंधी विशिष्ट प्रावधान पर दिए गए जानकारी कार्यालयी काम-काज के लिए उपयोगी है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2022-23 (Computer No. 118375)
CORRESPONDENCE(843936/2023/HINDI CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 30

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24

दिनांक- 08.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
6ठी एवं 7वीं मंजिल, आर.टी.आई भवन,प्लाट-सी.-2,
जी. एन. ब्लाक,बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व),
मुंबई – 400051
ईमेल- pdashippingmum@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** के **18वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** का **18वाँ** अंक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्री जय राम सिंह द्वारा रचित लेख **'कंठस्थ 2.0 – राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक क्रांतिकारी कदम'** , श्री अजीत कुमार द्वारा रचित निबंध **'मुंबई दर्शन'** , श्री सुरेश कुमार द्वारा रचित लघुकथा **'मेंढक और चूहा'** बहुत अच्छी लगी।

इसके अतिरिक्त इस पत्रिका में आपका नियमित स्तंभ **'स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि'** तथा **'जो लौट के घर न आए'** अत्यंत सराहनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2022-23 (Computer No. 118375)
CORRESPONDENCE(853930/2023/IT CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 33

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/84 दिनांक:- 12 /05/2023

12 MAY 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ रा.भा.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा पूर्व
मुंबई- 400 051

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी, वो हैं- मस्त बचपन, गीतिका, परिधान और सोच एवं पकवान आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

तु. अधिकारी 12/05/23

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/2-10/2023-24/54 दिनांक -11.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई-400051 ।

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

सुश्री रितु मोटवानी की 'नेताजी, तुम अमर हो आज भी', सुश्री प्रतिभा वर्मा की 'खूबसूरत संसार', श्री दीपेन्द्र कुमार राज की 'कहाँ पहुँच गए हम', श्री जिज्ञासु पन्त की 'रास्ते (ललित निबंध) रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

23

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 21/09/2023 02:07 PM

CORRESPONDENCE(848398/2023/IT CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 33

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं./Phone No: 0281-2441600-06 (पीबीएक्स/PBX) फैक्स नं./Fax No: 0281-2456238 ईमेल/Email: agaegujarat@cag.gov.in

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2023-24/27
दिनांक:09.05.2023

सेवा में,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (नौवहन)
मुंबई - 400 051

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "आँचल" के 18 वे अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "आँचल" के 18 वे अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, हिंदी प्रकोष्ठ की रचना "भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि श्रृंखला", सुश्री रितु मोटवानी की रचना "नेताजी, तुम अमर हो आज भी", और "मस्त बचपन", श्री जय राम सिंह की रचना "जय जय कंप्यूटर महाराज", सुश्री प्रतिभा वर्मा की रचना "खूबसूरत संसार", श्री दीपेन्द्र कुमार राज की रचना "कहाँ पहुँच गए हम", श्री हरीश मीणा की रचना "गजल", श्री प्रवीण वाकोडे की रचना "परिधान और सोच (लघुकथा)", श्री सुरेश कुमार की रचना "मेंढक और चूहा (लघुकथा)", श्री तरुण बजाज की रचना "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत (निबंध)", श्री अंकित आजाद की रचना "जीवन और नौकायन (निबंध)", श्री अजित कुमार की रचना "मुंबई दर्शन (निबंध) ", आदि रचनाएँ विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। इसके अतिरिक्त, श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को वर्ष 2022 में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रथम आने और स्वर्ण पदक जीतने पर उन्हें बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका के माध्यम से "ख" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका का मुख पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ अत्यंत सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियां पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'गिरनार' परिवार को आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

25

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 21/09/2023 02:07 PM

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2022-23 (Computer No. 118375)
CORRESPONDENCE(861733/2023/IT CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 37

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-V-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ – 226010(उत्तर प्रदेश)

पत्रांक: प्र०नि०ले०प० (केन्द्रीय)/प्रशासन/राजभाषा हिंदी/फा०सं०-67/ 66 दिनांक: 15/05/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/ प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (नौवहन), मुंबई,
मुंबई- 40005।

विषय:- विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के पीडीएफ और लिंक के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के पीडीएफ और लिंक ई-मेल द्वारा प्राप्त हुआ है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी है, साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाओ में से "विश्व हिन्दी दिवस एवं राष्ट्रीय हिन्दी दिवस", "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" एवं "कंठस्थ 2.0: राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए क्रांतिकारी कदम" बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाये अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

CORRESPONDENCE(855435/2023/HINDI CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)) REFERRED IN NOTE 37

कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड

"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांकः26 / हि०प्र० / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 56 दिनांकः17.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई ।

विषय - विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आंचल' के 18वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आंचल' का 18वां अंक इस कार्यालय द्वारा प्राप्त किया गया | पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं | प्रस्तुत अंक सराहनीय ,पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है |

पत्रिका के उत्तम संयोजन एवं सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनायें |

हिन्दी अधिकारी

28

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, प्रथम तल, निज़ाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन: ,033-2289/4111/12/13फैक्स: 033-2289-4080
ई-मेल- brosdkolkata@cag.gov.in

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/83

22 MAY 2023

दिनांक:-19.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
नौवहन
मुम्बई- 400 051

विषय:- हिंदी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "आँचल" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्री जिज्ञासु पंत का आलेख 'रास्ते', श्री तरुण बजाज का आलेख **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**, श्रीमती नयना केळसकर का आलेख **पकवान**, श्री अजीत कुमार का आलेख '**मुम्बई दर्शन**', श्री दीपआ शिरसाट की कविता **प्रार्थना** और सुश्री रितु मोटवानी की कविता '**मस्त बचपन**', अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चय ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "आँचल" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "आकांक्षा" परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

29

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

File No. [illegible] Computer No. 168082)

I/345733/2023

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय, उत्तर प्रदेश प्रयागराज

पत्रांक : ले व ह-2/05/हि.अ./ग्रुप-III/42/2023 खंड III दिनांक -22/08/2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई

विषय - कार्यालय की विभागीय हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" के 18 वें अंक के विषय में ।

महोदय,

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" के 18 वें अंक को पढ़ने एवं पी.डी.एफ. डाउनलोड करने का लिंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में शामिल की गई सभी रचनाएँ उच्चकोटि की है । पत्रिका में निहित सभी लेख, कविता उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हिंदी अधिकारी

30

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52,Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/4-O
दिनांक:09.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

विषय : विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक:पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वि.प./आँचल/2023-24 दिनांक 18.04.2023 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज -सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सुंदर है। विशेष रूप से राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 संबंधी विशिष्ट प्रावधान पर दिए गए जानकारी कार्यालयी काम-काज के लिए उपयोगी है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी

44

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वभिागीयपत्रकि/2022-23 (Computer No. 118375)
843936/2023/HINDI CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24 दिनांक- 08.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
6ठी एवं 7वीं मंजिल, आर.टी.आई भवन,प्लाट-सी.-2,
जी. एन. ब्लाक,बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व),
मुंबई – 400051
ईमेल- pdashippingmum@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** के **18वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** का **18वाँ** अंक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्री जय राम सिंह द्वारा रचित लेख **'कंठस्थ 2.0 – राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक क्रांतिकारी कदम'** , श्री अजीत कुमार द्वारा रचित निबंध **'मुंबई दर्शन'** , श्री सुरेश कुमार द्वारा रचित लघुकथा **'मेंढक और चूहा'** बहुत अच्छी लगी।

इसके अतिरिक्त इस पत्रिका में आपका नियमित स्तंभ **'स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि'** तथा **'जो लौट के घर न आए'** अत्यंत सराहनीय हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं
यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB &
U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/2-10/2023-24/54 दिनांक -11.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई-400051 ।

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

सुश्री रितु मोटवानी की 'नेताजी, तुम अमर हो आज भी', सुश्री प्रतिभा वर्मा की 'ख़ूबसूरत संसार', श्री दीपेन्द्र कुमार राज की 'कहाँ पहुंच गए हम', श्री जिज्ञासु पन्त की 'रास्ते (ललित निबंध) रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

47

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वभिागीयपत्रकि/2022-23 (Computer No. 118375)
[illegible]/2023/IT CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-[illegible]
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-[illegible]
[illegible]

[illegible]/2023-24/[illegible]
दिनांक 09.05.2023

सेवा में
[illegible]
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन)
मुंबई - 400 051

विषय- हिंदी गृह पत्रिका "आँचल" के 18 वें अंक के [illegible] के संबंध में।

महोदय,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

48

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on [illegible]

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वभिागीयपत्रकि/2022-23 (Computer No. 118375)
853930/2023/IT CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/80 दिनांक:- 12 /05/2023
12 MAY 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ रा.भा.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा पूर्व
मुंबई- 400 051

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी, वो हैं- मस्त बचपन, गीतिका, परिधान और सोच एवं पकवान आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-1916, FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

49

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

Email **Jayram Singh**

Fwd: विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति की प्राप्ति के संबंध में ।

From : Jayram Singh <jayrams.comm@cag.gov.in> Fri, May 19, 2023 01:57 PM
Subject : Fwd: विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति की प्राप्ति के संबंध में ।
To : Jayram Singh <jayrams.comm@cag.gov.in>

From: "MOUSUMI CHOUDHARY" <mousumic.asm.au@cag.gov.in>
To: "PDA Shipping Mumbai" <pdashippingmum@cag.gov.in>
Cc: "Deepak Joshi" <deepakj.mh3.au@cag.gov.in>
Sent: Wednesday, May 17, 2023 4:44:09 PM
Subject: विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति की प्राप्ति के संबंध में ।

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई

विषय: विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई ,द्वारा प्रकाशितविभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"आँचल" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

50

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM 1/2

कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड

"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक:26 / हि०प्र० / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 56 दिनांक17.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई ।

विषय - विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आंचल' के 18वें अंक की प्राप्ति के संबंध में |

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आंचल' का 18वां अंक इस कार्यालय द्वारा प्राप्त किया गया | पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं | प्रस्तुत अंक सराहनीय ,पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है |

पत्रिका के उत्तम संयोजन एवं सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनायें |

17/5/23
हिन्दी अधिकारी

51

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निज़ाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन: ,033-2289/4111/12/13फैक्स: 033-2289-4080
ई-मेल:- broadkolkata@cag.gov.in

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/83 22 MAY 2023
दिनांक:-19.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
नौवहन
मुम्बई- 400 051

विषय:- हिंदी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "आँचल" के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "आँचल" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्री जिज्ञासु पंत का आलेख 'रास्ते', श्री तरुण बजाज का आलेख '**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**', श्रीमती नामता वेडाकर का आलेख '**पकवान**', श्री अजीत कुमार का आलेख '**मुम्बई दर्शन**', श्री वीणा हिरवाट की कविता '**प्रार्थना**' और सुश्री रितु मोटवानी की कविता '**मस्त बचपन**', अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चय ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "आँचल" के उज्जवल भविष्य के लिए "आकांक्षा" परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

53

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

File No. पीडीए(नौवहन)/प्रशा./विभागीयपत्रिका/2022-23 (Computer No. 118375)
893313/2023/HINDI CELL (PDA (SHIPPING)-MUMBAI)

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग,
मुम्बई शाखा ,नवभवन, आर .के. मार्ग, बॅलार्ड इस्टेट, मुम्बई-400001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit, Environment and Scientific Departments,
Mumbai Branch, 3rd Floor, Nou bhavan, R.K. Marg,
Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: bsdmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सत्यमेव जयते

Dedicated to Truth in Public Interest

सं. स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकाएँ/भाग-III/2023-24/ 410 दिनांक: 05 JUN 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई

विषय: हिन्दी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय से संबन्धित आपके कार्यालय के पत्र सं.पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वि.प./आँचल/2023-24 दिनांक: 18.04.2023 के संदर्भ में हिन्दी पत्रिका 'आँचल' के 18वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय है, एवं छाया चित्रों का संकलन भी उत्तम है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सरल, ज्ञानवर्धक, रुचिकर एवं प्रासंगिक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

55

Generated from eOffice by JAY RAM SINGH, JT(ADMN)-JRS, JUNIOR TRANSLATOR, PDA (SHIPPING)-MUMBAI on 25/05/2023 02:07 PM

चित्र बोलते हैं

सर्वश्रेष्ठ प्रबंधित कार्यालय (द्वितीय) पुरस्कार ग्रहण करते महानिदेशक महोदय

सर्वश्रेष्ठ प्रबंधित कार्यालय (द्वितीय) प्रमाणपत्र के साथ हर्षित कार्यालयकर्मी

कार्यालय में महाराष्ट्र का परंपरागत त्योहार "हल्दी-कुंकुम" का दृश्य

श्री राजेंद्र तोरसकर की सेवानिवृत्ति के अवसर पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित पिकनिक में उत्साहपूर्वक भाग लेते कार्मिक और परिजन

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित पिकनिक में आनंदित कार्मिक और परिजन

श्री नितिन कुमार, स.ले.प.अ. के स्थानांतरण के अवसर पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

श्री निशू सोलंकी, स.ले.प.अ. के स्थानांतरण के अवसर पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण" कार्यक्रम में महानिदेशक महोदय से प्रमाणपत्र ग्रहण करते श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ सामूहिक लंच करते उप निदेशक (प्रशासन) महोदय

श्री गणेश पालीवाला, सहा. पर्य. की सेवानिवृत्ति के अवसर पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

श्री नितेश चौधरी, स.ले.प.अ. के स्थानांतरण पर शुभकामनाएँ देते महानिदेशक महोदय

हिंदी पखवाड़ा एवं हास्य-कवि सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते मुख्य अतिथि श्री अरविंद शर्मा 'राही', महानिदेशक महोदय, महानिदेशक क्षे.प्र.सं., मुंबई एवं निदेशक महोदया

हास्य-कवि सम्मेलन के आमंत्रित हास्य कवियों के साथ मुख्य अतिथि श्री अरविंद शर्मा 'राही' एवं महानिदेशक महोदय

नियुक्तियाँ / पदोन्नतियाँ / स्थानांतरण / सेवानिवृत्ति
(01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक)

नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	सुश्री मीनाक्षी	आशुलिपिक	27.02.2023
2	श्री सुमित पूनिया	ले.प.	09.03.2023
3	श्री मुकुल गुप्ता	ले.प.	13.03.2023
4	सुश्री मंजरी सारस्वत	ले.प.	14.03.2023
5	श्री मुकेश कुमार	ले.प.	24.03.2023
6	श्री सुमेश नायर	स.ले.प.अ.	14.04.2023
7	श्री सूरज जैसवार	ले.प.	20.04.2023
8	श्री संजय कुमार	स.ले.प.अ.	08.05.2023
9	सुश्री शिवानी	स.अ.प.ले.	16.05.2023
10	श्री जितेन्द्र सिंह	स.अ.प.ले.	18.05.2023
11	श्री सचिन हूडा	स.ले.प.अ.	22.05.2023
12	श्री प्रमोद रावत	स.ले.प.अ.	05.06.2023
13	सुश्री पूजा चौधरी	कनिष्ठ अनुवादक	22.06.2023

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री सुरेश कुमार	व.ले.प.	02.01.2023
2	श्री गणपत बिर्जे	व.ले.प.	02.01.2023
3	श्री योगेश	व.ले.प.	02.01.2023
4	सुश्री प्रतिभा वर्मा	व.ले.प.	02.01.2023

स्थानान्तरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कहाँ
1	श्री नितेश चौधरी	स.ले.प.अ.	नई दिल्ली
2	श्री गौरव सिंह	सअ.प.ले..	नई दिल्ली
3	श्री ज्ञानेंद्र वर्मा	वअ.प.ले..	प्रयागराज
4	श्री निशू सोलंकी	स.ले.प.अ.	नई दिल्ली
5	श्री बा. अय्यर	सअ.प.ले..	का.म.वा.ले.प. मुंबई
6	श्री नितिन कुमार	सअ.प.ले..	नई दिल्ली

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री गणेश पालीवाला	सहा. पर्य.	28.02.2023
2	श्रीमती बी. ई. आई. ग्रैसियास	स.ले.प.अ.	31.03.2023
3	श्रीमती सुनीता बोडस	पर्यवेक्षक	31.05.2023
4	श्री राजेन्द्र तोरसकर	बहुकार्यिक कार्मिक	31.07.2023

"आँचल" परिवार नवनियुक्त और योगदान करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है । **"आँचल"** परिवार सभी पदोन्नत हुए कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता है एवं भविष्य में ऐसे कई पदोन्नतियों की कामना करता है। **"आँचल"** परिवार सभी स्थानान्तरित कार्मिकों को उनके नए कार्यक्षेत्र और कार्यालय के सफल सेवाकाल के लिए शुभकामनाएँ देता है । **"आँचल"** परिवार सभी सेवानिवृत्त कार्मिकों को उनके सेवानिवृत्त जीवन में अच्छे स्वास्थ्य एवं खुशहाली के लिए शुभकामनाएँ देता है ।

पारदर्शिता • सामाजिक जागरूकता • सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा का वैश्विक नेतृत्व • संयुक्त राष्ट्र संघ की लेखापरीक्षा • स्वतंत्र और विश्वसनीय लेखापरीक्षा • संवैधानिक दायित्व • पेशेवर उत्कृष्टता •

सक्षम वित्तीय प्रशासन • संसदीय पटल • ऑडिट दिवस • राजभाषा प्रोत्साहन • संघीय वित्तीय उत्तरदायित्व • राज्य वित्त •

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ✦ COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

आँचल